बाल गुरु

ओम, मंशा आ एकटा एहन उत्तर जे बड़कोकेँ झुका देलक

गजेन्द्र ठाकुर

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम

मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

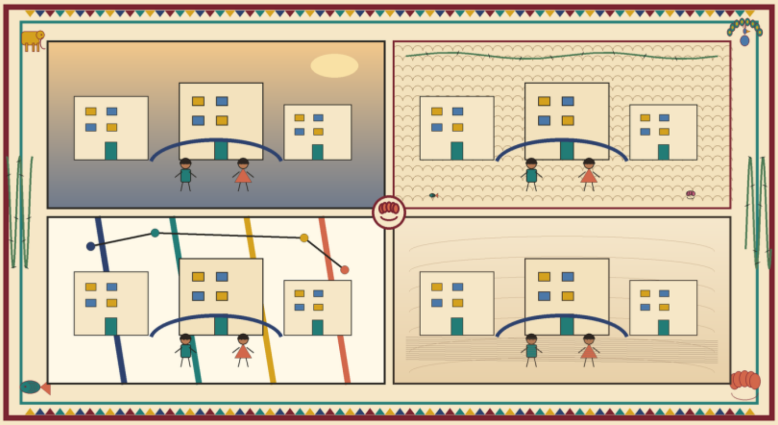

उपक्रम : दू टा नाम

ओम नाम रहै ओइ बच्चाक। मंशा नाम रहै ओइ बुच्चीक। दुनू नाम एतेक छोट, जे कागजपर लिखू त' आधा पाँतिमे अँटि जाए — मुदा एहि खिस्साक अन्त धरि पहुँचैत-पहुँचैत यएह दूटा छोट नाम एकटा एहन पैघ बात कहि जाएत, जकरा बड़का-बड़का पोथी सेहो कहैत-कहैत हबोढ़ेकार भऽ जाइत अछि।

दिल्ली — जतय सभ किओ कतहु ने कतहुसँ आएल अछि। ओही दिल्लीक कोनो आवासीय परिसरमे ई खिस्सा भेल। परिसरक बीचमे एकटा घासक पार्क छल, आ पार्कक बीचमे — ई खिस्सा।

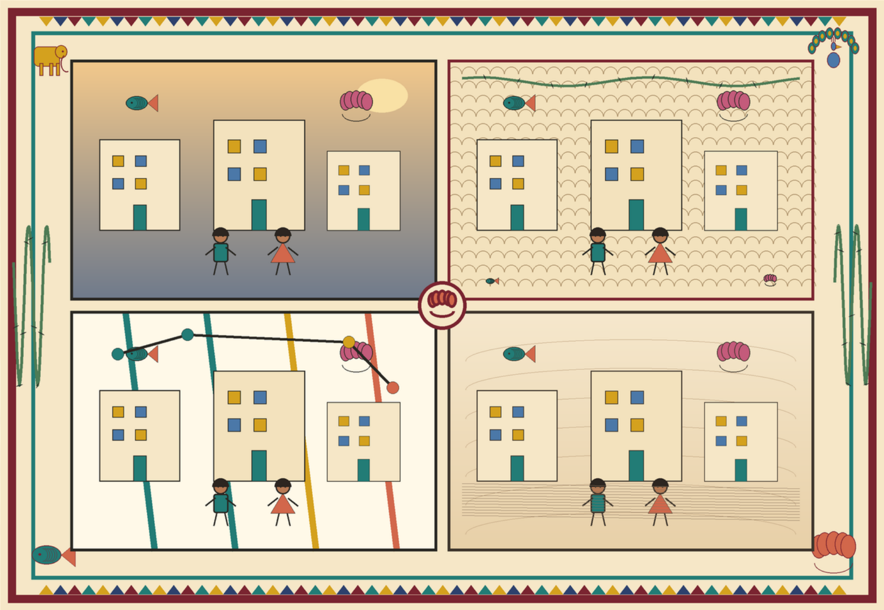

अध्याय १ : दिल्लीक आवासीय परिसर

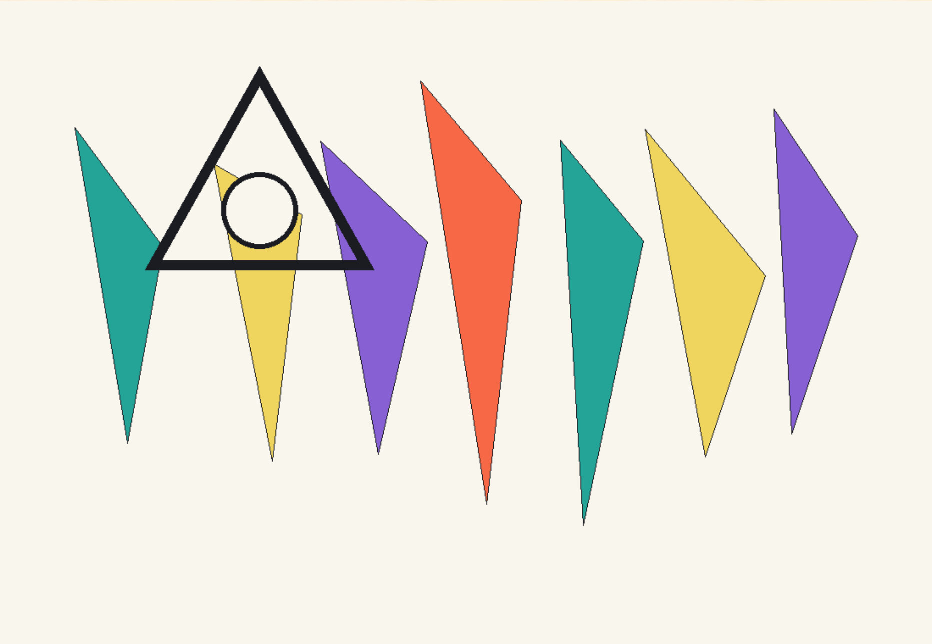

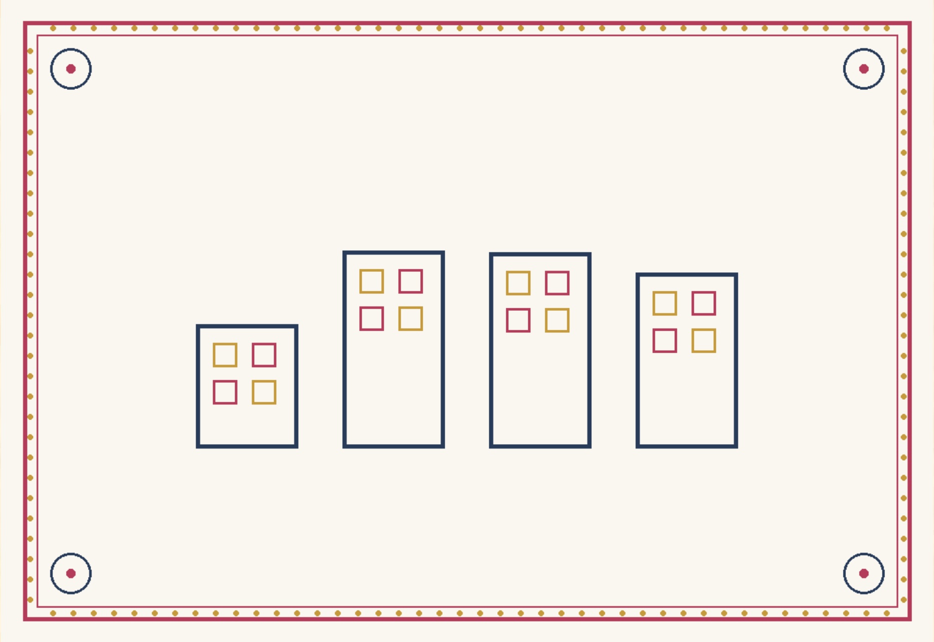

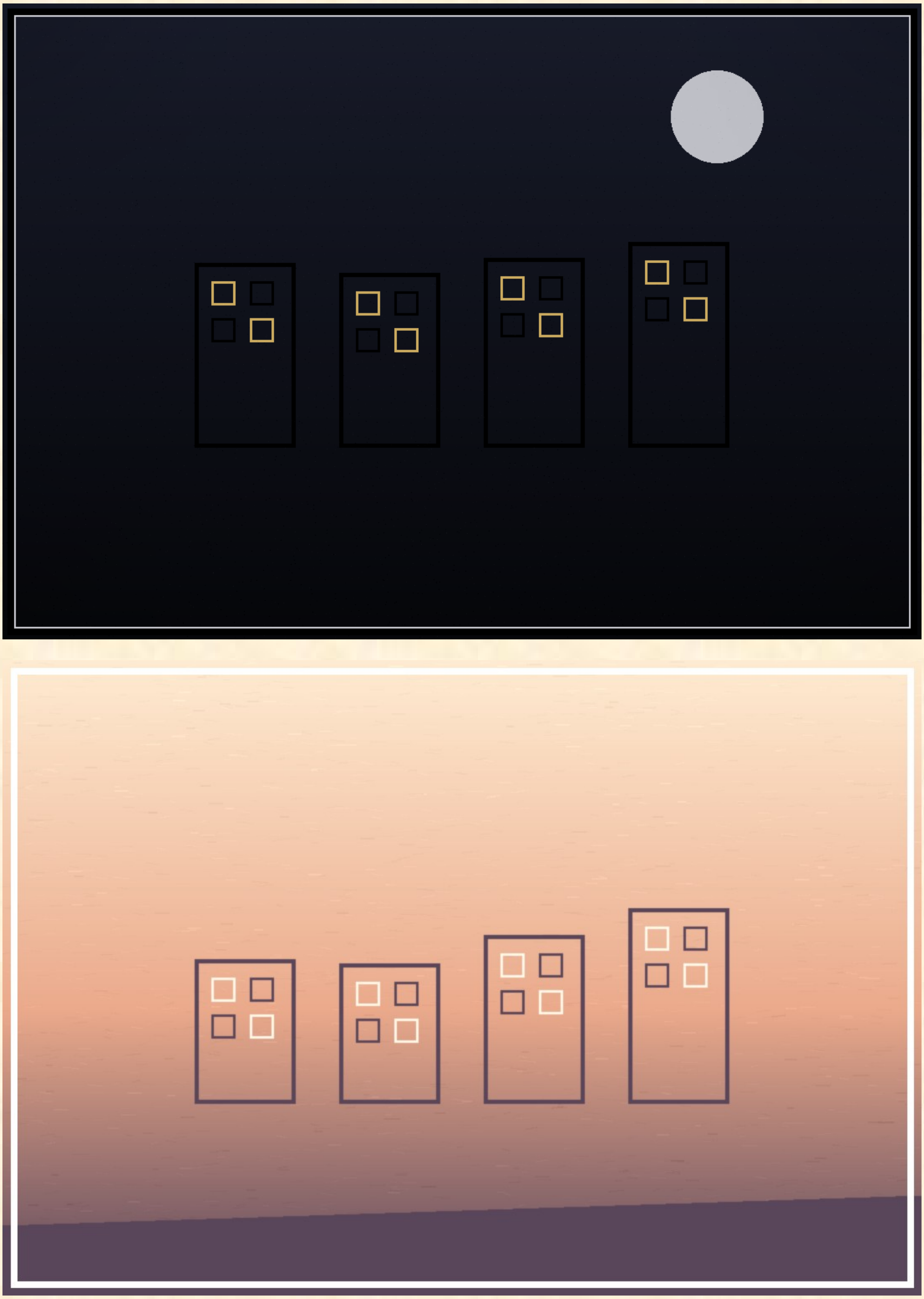

चित्र 1

आवासीय परिसर माने — एक्कहि रंगक ढेर रास मकान, एक्कहि सन बालकनी, एक्कहि सन दरबज्जा। ऊपरसँ देखू त' सभ फ्लैट जौआँ भाइ जकाँ। मुदा भीतर? भीतर सभ दरबज्जाक पाछाँ एकटा अलग देश बसैत छल।

तेसर महलाक एकटा फ्लैटमे मिथिला बसैत छल — ओमक घर। चूल्हिपर अरबा चाउरक भात, बरखा दिनमे तरुआ-तिलकोरक गन्ध, आ माएक मुँहसँ खसैत मैथिली लोरि। ओमक माए गृहिणी छलीह आ पिता नोकरिहारा — भोरे टिफिन लऽ कऽ निकलैत, साँझखन थाकल घुरैत।

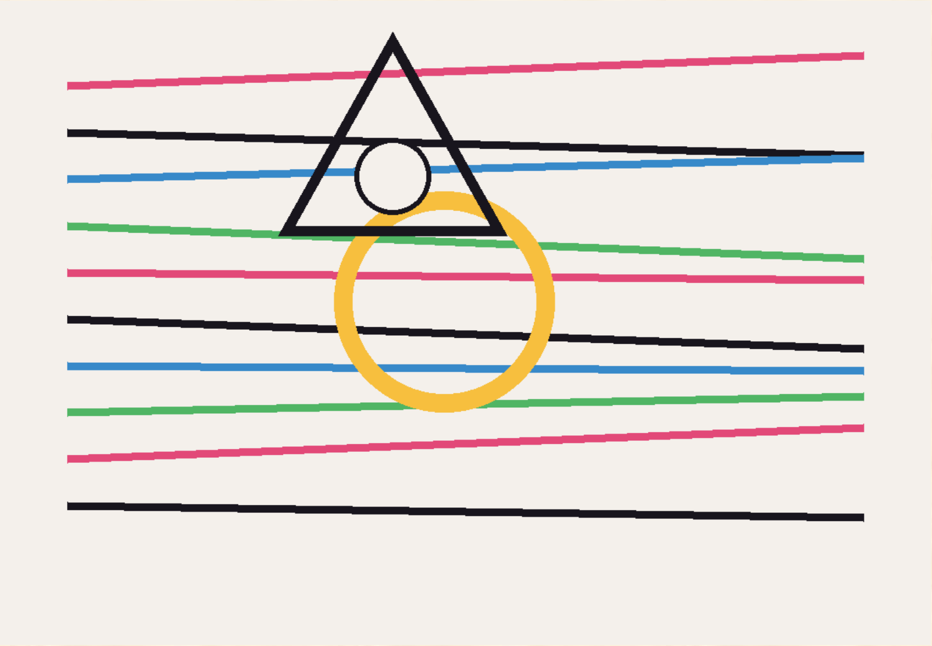

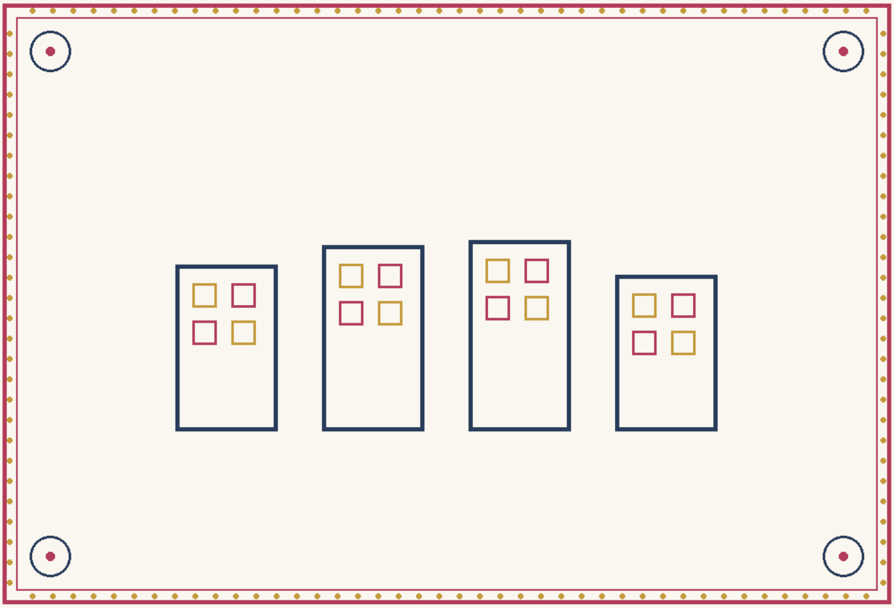

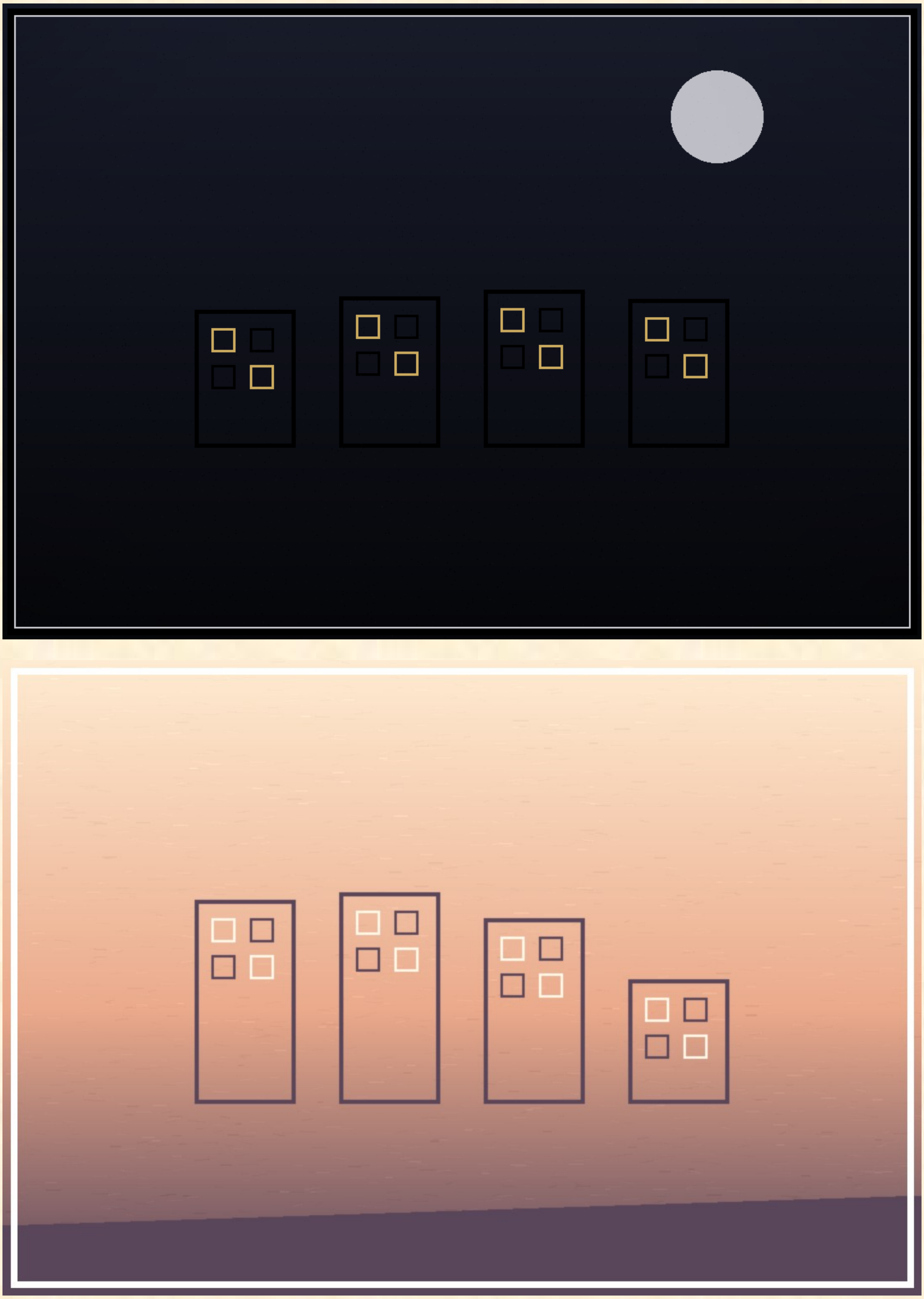

चित्र 2

आ ठीक सामनेबला ब्लॉकमे पंजाब बसैत छल — मंशाक घर। ओतय भोरे-भोर तड़काक छौंक आ मंशाक पिताक ओ मुरेठा, जे बान्हल जाइत छल त' लगैत जेना माथपर भोरका सूर्य बान्हल गेल हो। मंशाक माए हुनका 'सरदारजी' कहै छलीह — एतेक स्नेहसँ, जे ओ शब्द नाम नहि, गीत बुझाइत छल।

मंशाक माए आ पिता — दुनू नोकरिहारा। भोरे दुनू गोटे दू दिस निकलि जाइत छलाह, आ मंशाक दिनक चाभी रहि जाइत छल एकटा तेसर हाथमे। ओ तेसर हाथ — एहि खिस्साक सभसँ चुप आ सभसँ जरूरी पात्र — छलि महुआ।

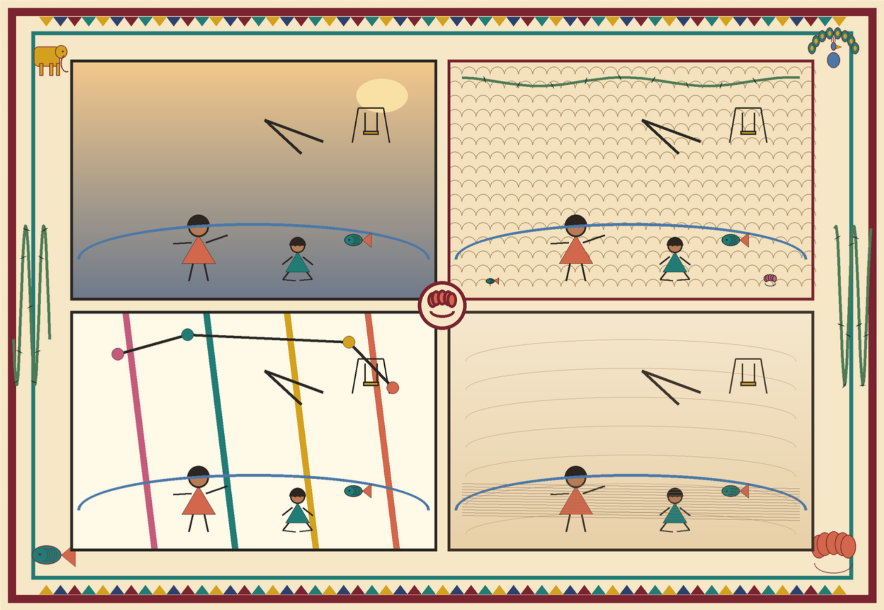

अध्याय २ : महुआ

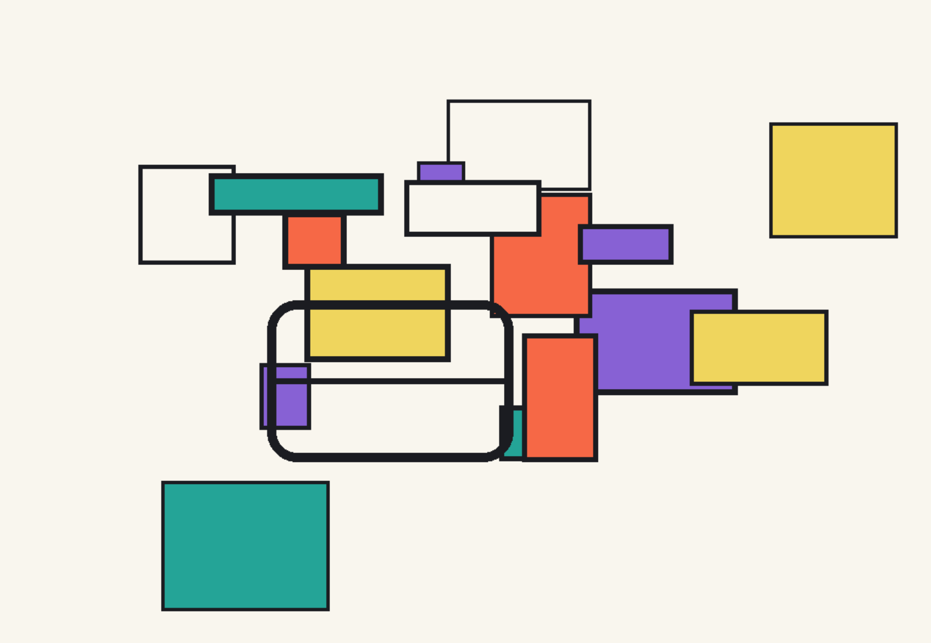

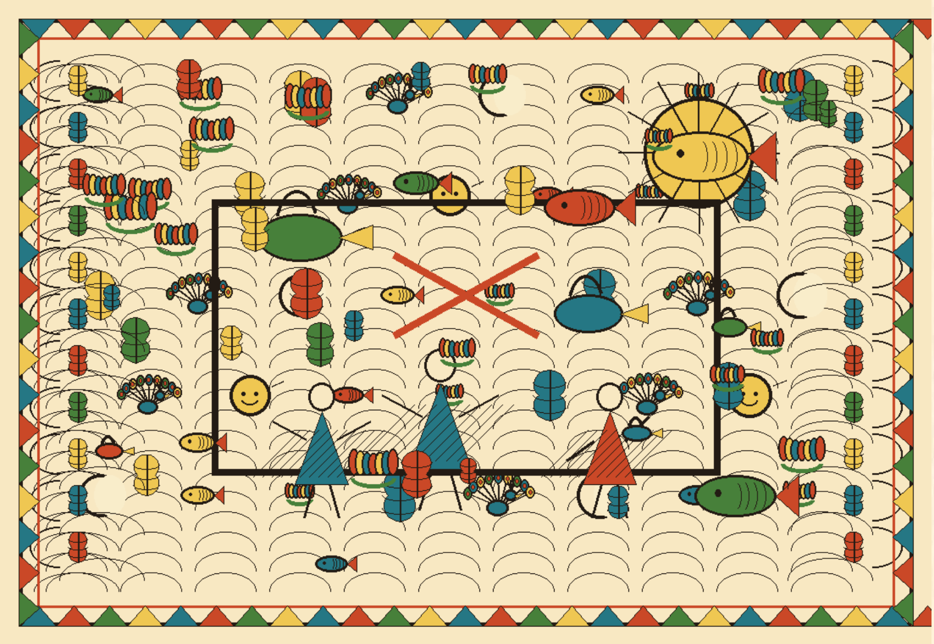

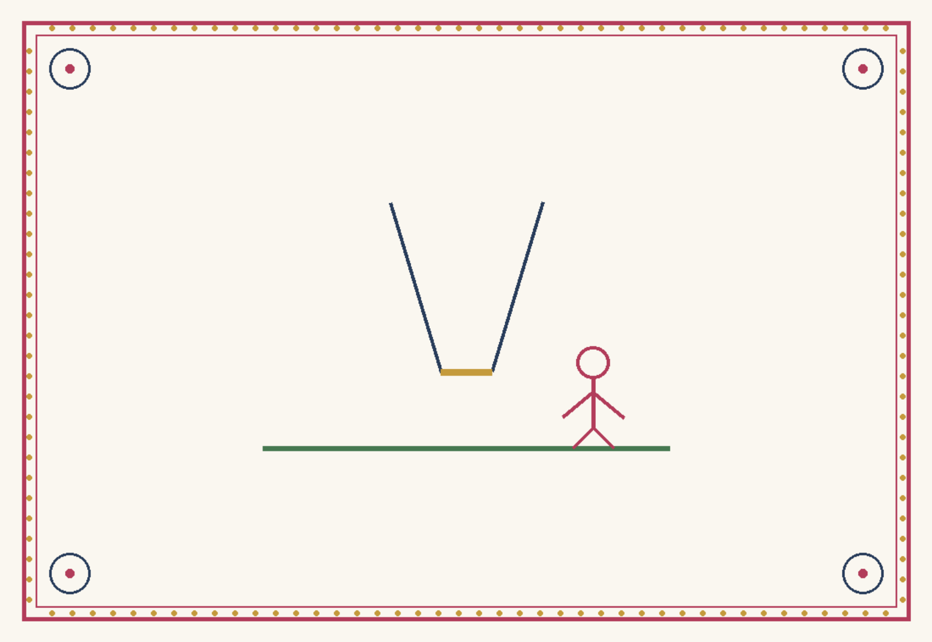

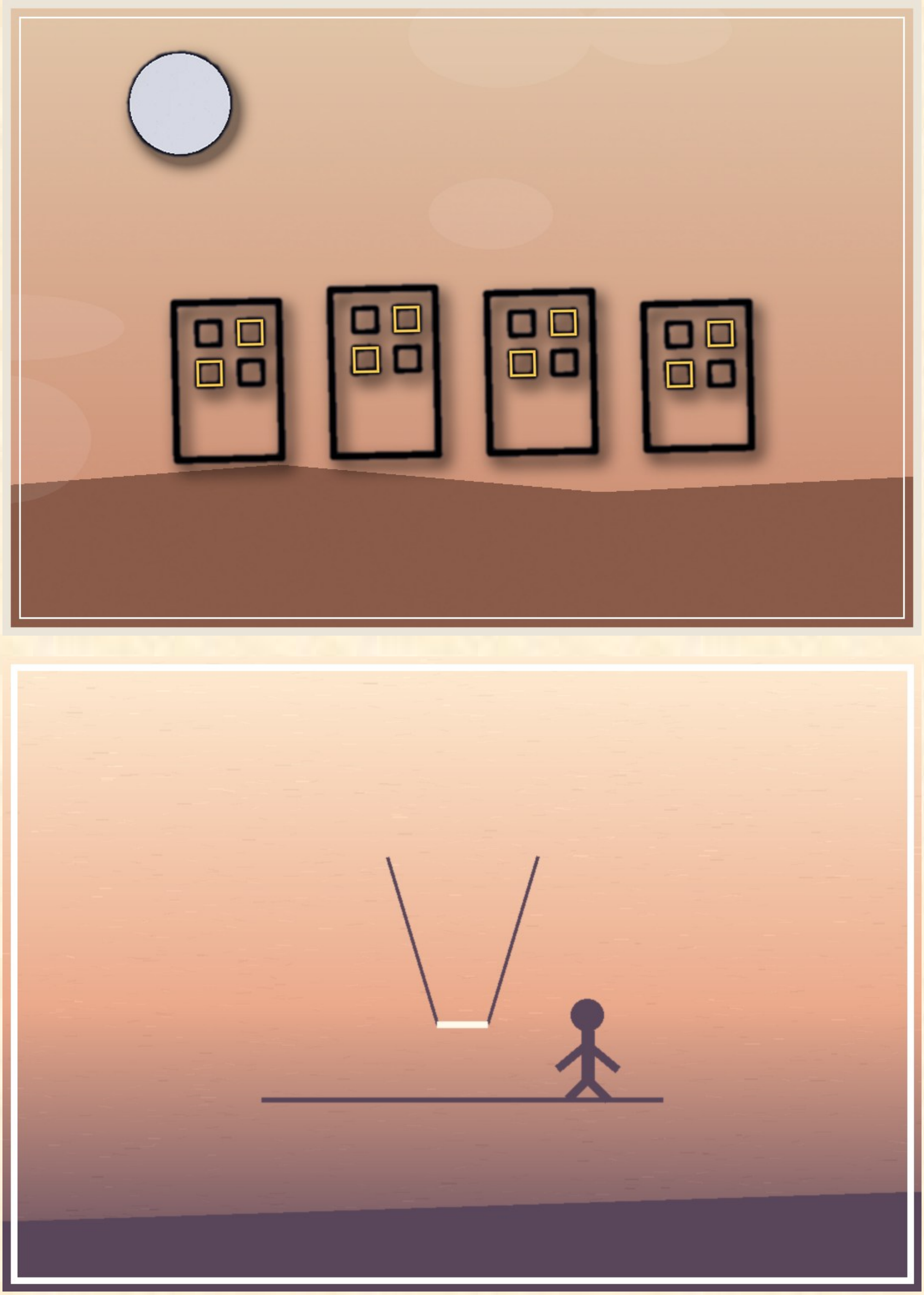

चित्र 3

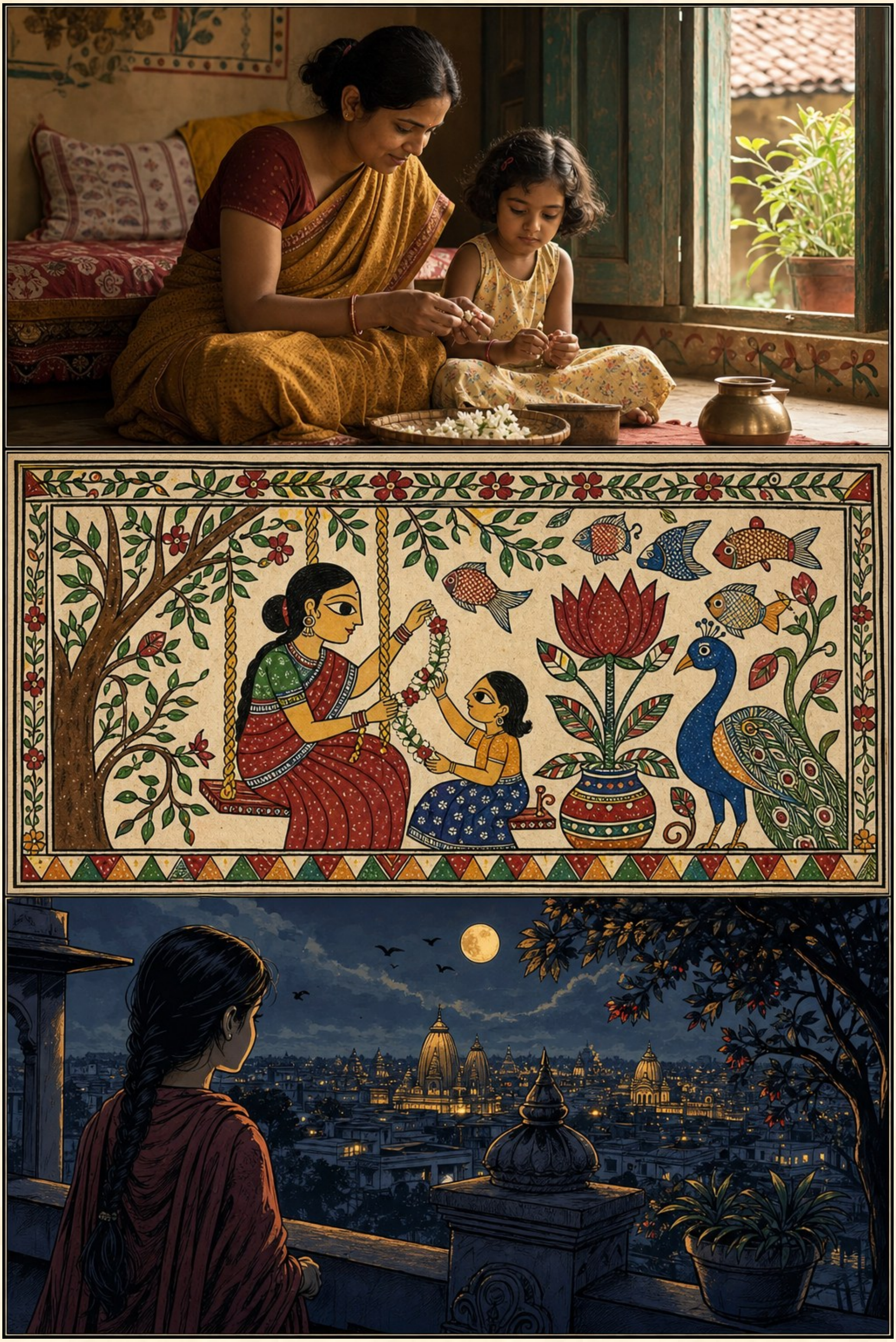

महुआ ओड़ीसासँ आएल छलि — मंशाक घरमे नोकरी करए। उमरि? बेसी नहि। एतबे, जे अपन गाममे रहितए त' अपनहुँ ककरो कोरा-काँख खेलितए। मुदा दिल्लीमे ओ अपने एकटा बच्चीक देख-रेख करैत छलि — मंशाक।

भोरे मंशाकेँ उठाएब, केश बना कऽ दुजुट्टी बान्हब, दूध गरम करब, आ साँझखन घासक पार्कमे लऽ जाएब — ई सभटा महुआक जिम्मा छल। मंशाक माए-पिता नोकरीसँ घुरथि, ताबत मंशाक पूरा दिन महुआक आँचरमे बीतैत छल।

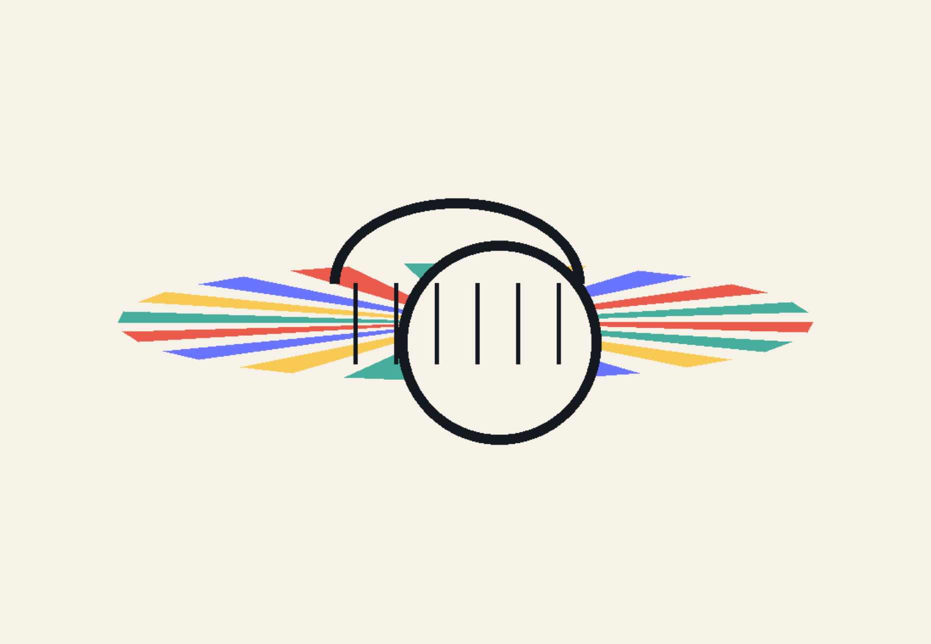

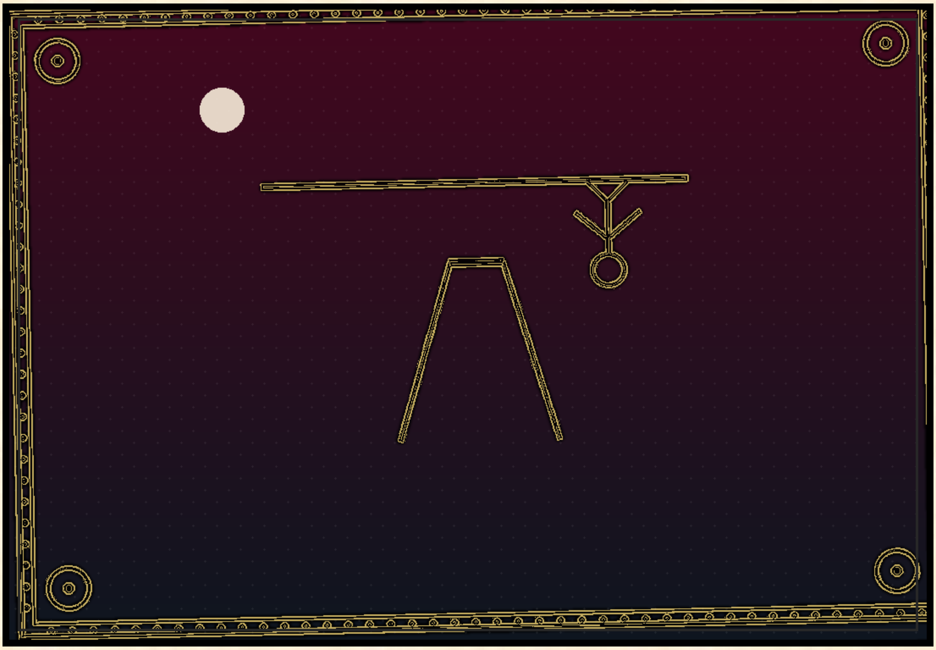

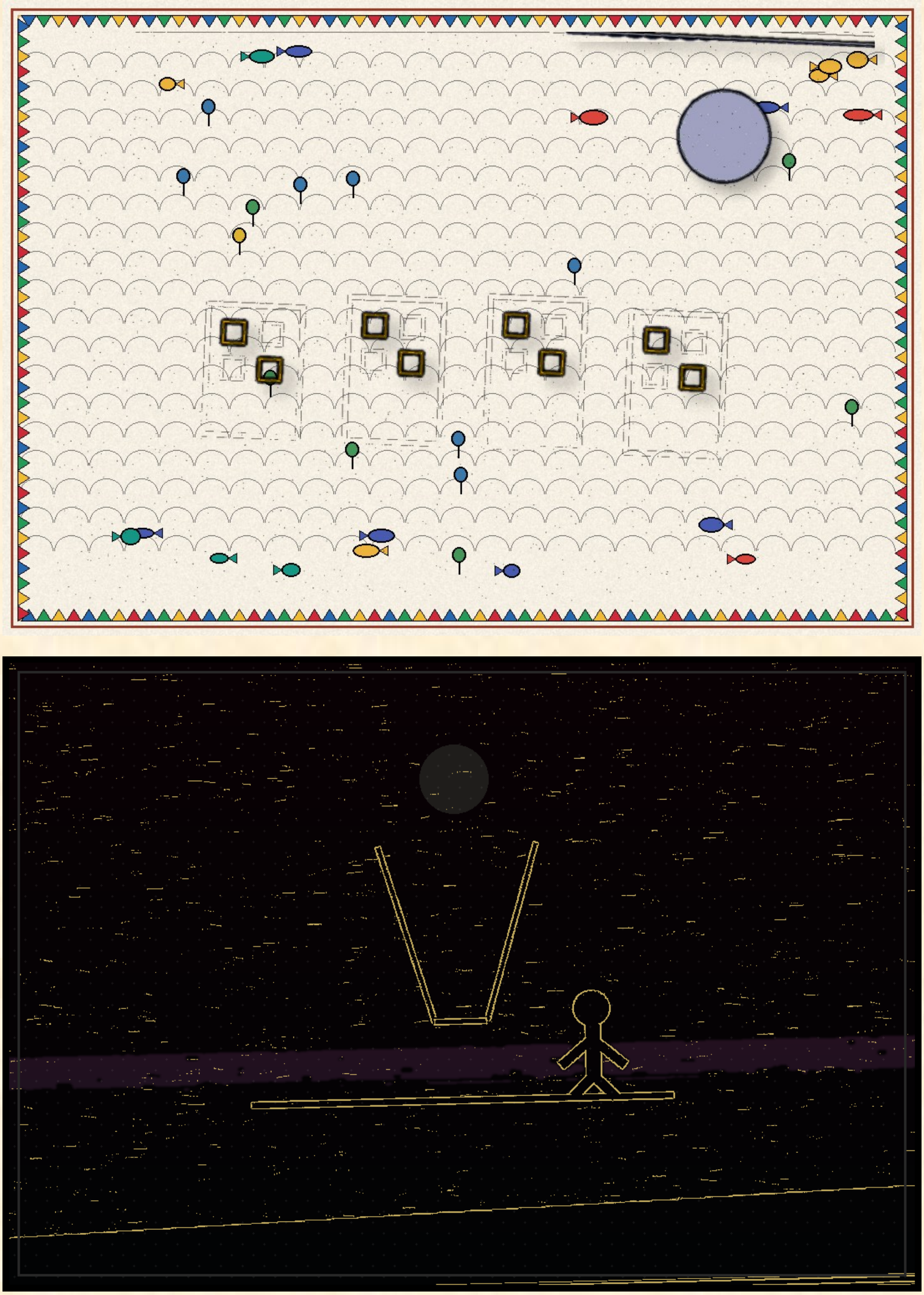

चित्र 4

महुआ कम बजैत छलि। मुदा मंशाकेँ झुला झुलबैत काल ओ कखनो काल ओड़िआमे कोनो गीत गुनगुनाए लगैत छलि — मद्धिम, मीठ, आ कनी उदास। मंशा पुछै, 'ई कोन गीतिया छी, महुआ दीदी?' महुआ हँसि दैत छलि, 'हमर गामक।' आ गीत ओतहि रुकि जाइत छल, जेना गामक नाम लइते गीतक गरा भरि आएल हो।

पार्कक बड़का लोक सभ महुआकेँ 'मंशाबाली आया' कहैत छल। खाली एक गोटे ओकरा नामसँ चिन्हैत छलीह — ओमक माए। ओ कखनो काल महुआकेँ लग बैसा लैत छलीह, 'खा लैह बुच्ची, तोहूँ त' बच्चे छह।' आ महुआक आँखिमे ओहि साँझ ओड़ीसाक कोनो नदी झलकि जाइत छल।

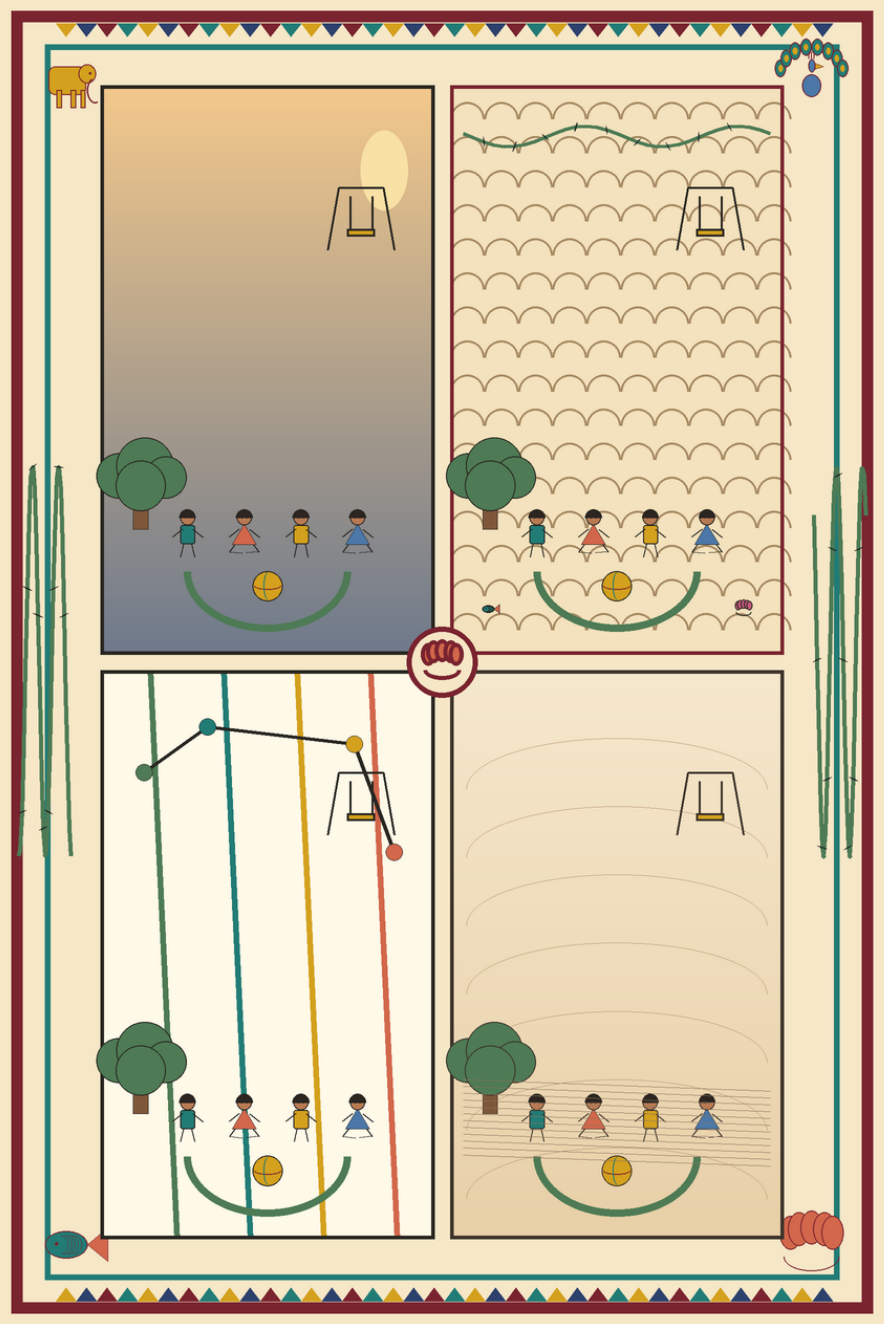

अध्याय ३ : घासक पार्क

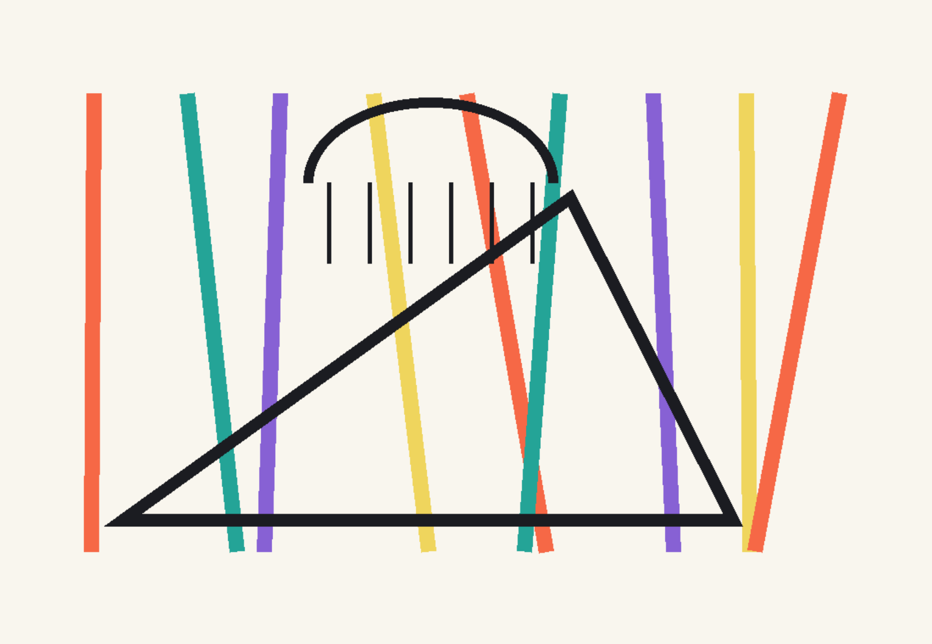

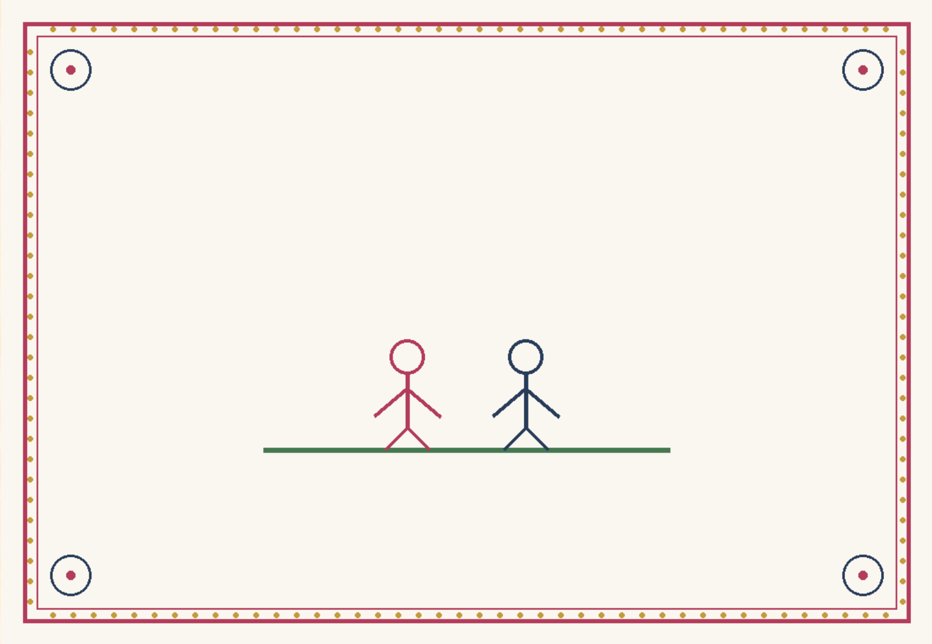

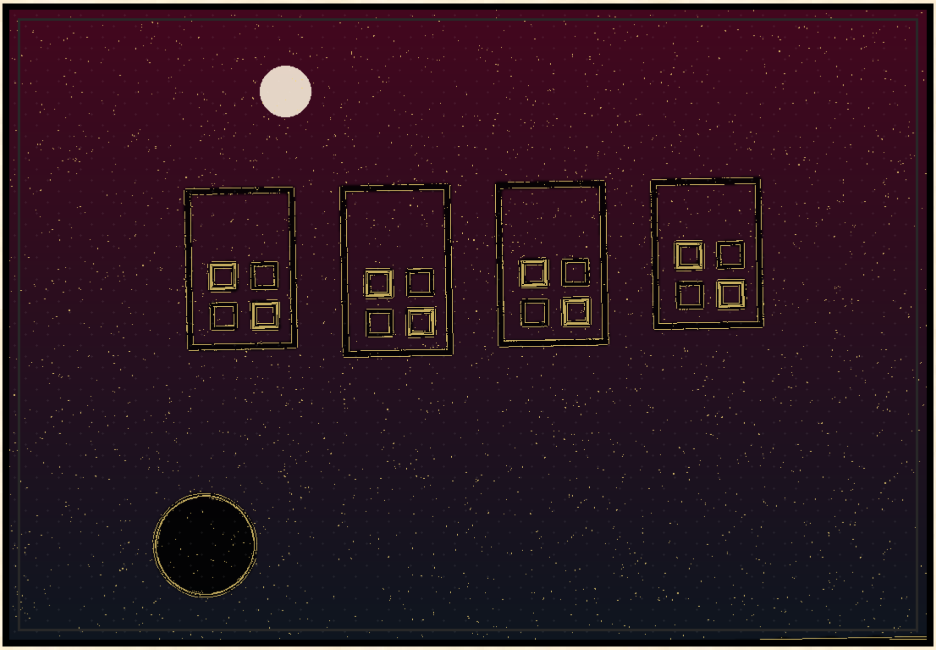

चित्र 5

परिसरक बीचला घासक पार्क — एहि खिस्साक राजधानी। साँझ पड़िते ओतय बच्चा सभक संसद बैसैत छल: केओ साइकिल दौड़बैत, केओ गेन्द, केओ खाली दौड़िते।

ओम ओहि पार्कमे अपन माएक संग अबैत छल, आ मंशा महुआक संग। पहिल भेँट कोना भेल — से ठीक-ठीक ककरो मोन नहि; चारि बरखक दोस्तीक यएह त' सुन्नरता छै, ओकर कोनो तारीख नहि होइ छै। बस एतबा सभ देखलक जे एक साँझ दुनू संगे झुलापर छल, आ तकर बाद सभ साँझ।

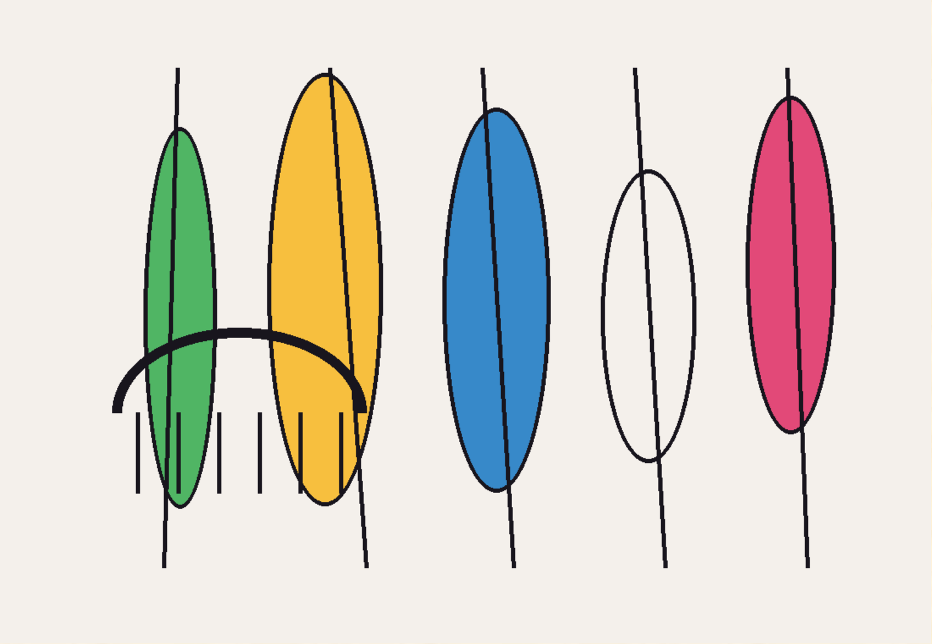

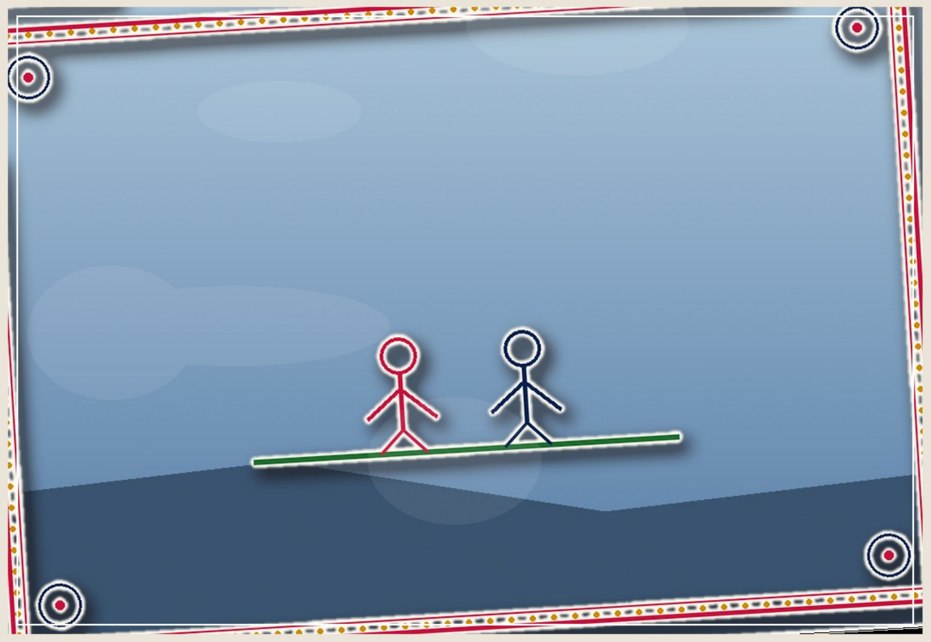

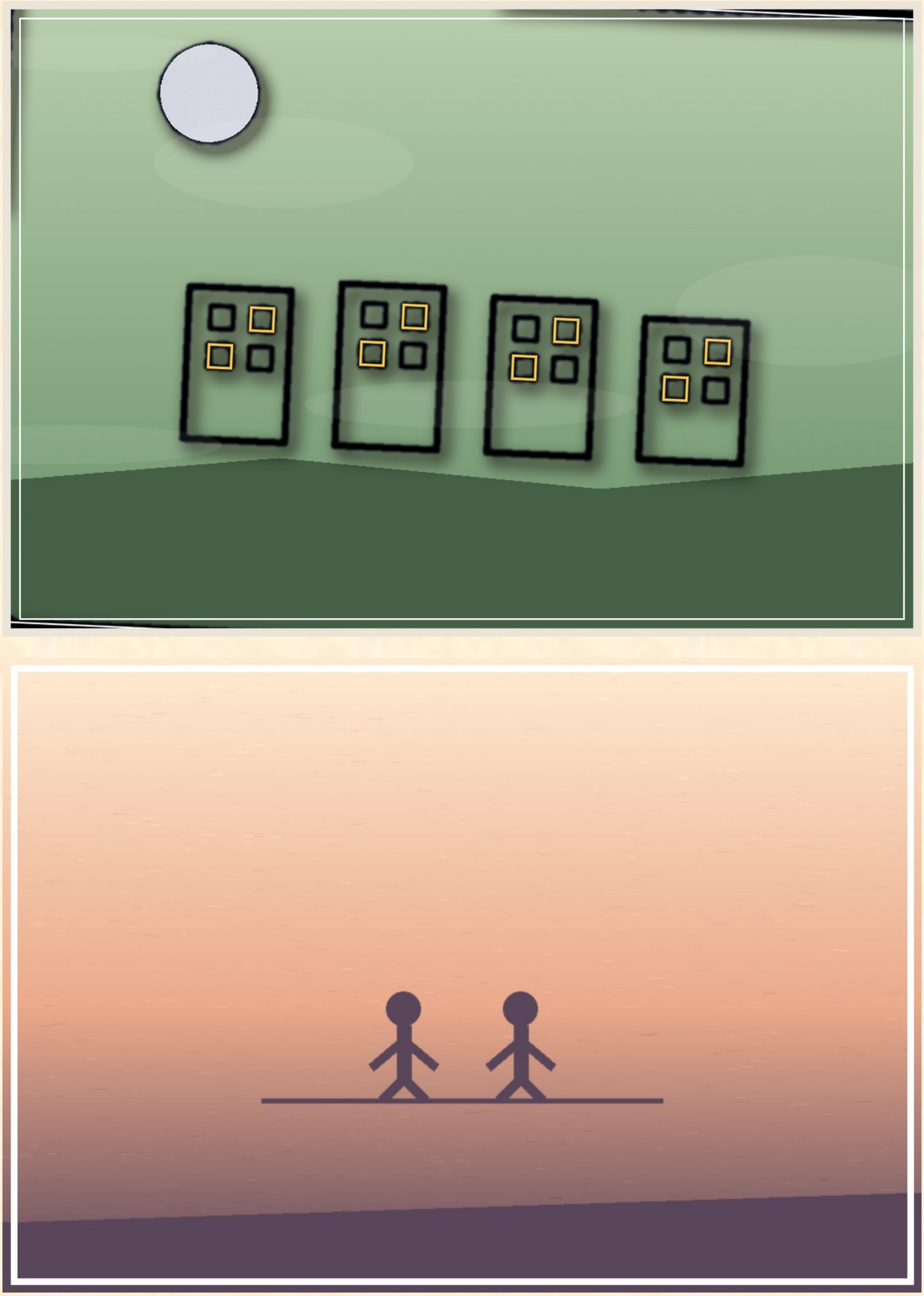

चित्र 6

ओम शान्त छल — कम बाजए, बेसी सुनए। मंशा ठीक उनटा — बातक फुलझड़ी, तामसमे आगि। ओम कोनो चीज बनबैत छल त' मंशा ओकर रखबारि करैत छलि; मंशा कतहु अड़ि जाइत छलि त' ओम चुपचाप ओकर हाथ पकड़ि लैत छल। दुनूक जोड़ी देखि पार्कक दादी-नानी सभ हँसैत छलीह।

मिथिलाक बच्चा, पंजाबक बुच्ची, ओड़ीसाक महुआ, आ दिल्लीक घास — साँझक ओहि छोट पार्कमे पूरा देश खेलाइत छल, आ ककरो बुझले नहि छलै।

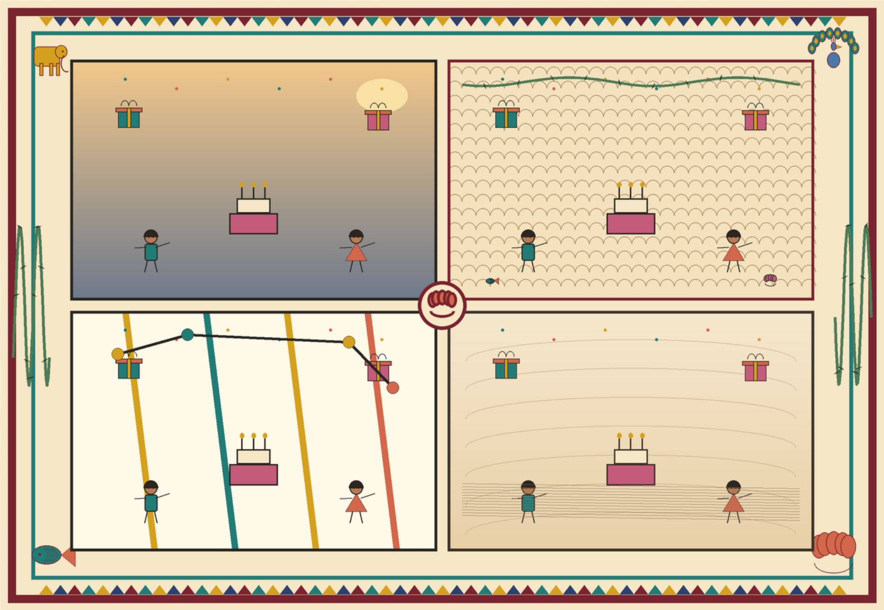

अध्याय ४ : जन्मदिनक रीति

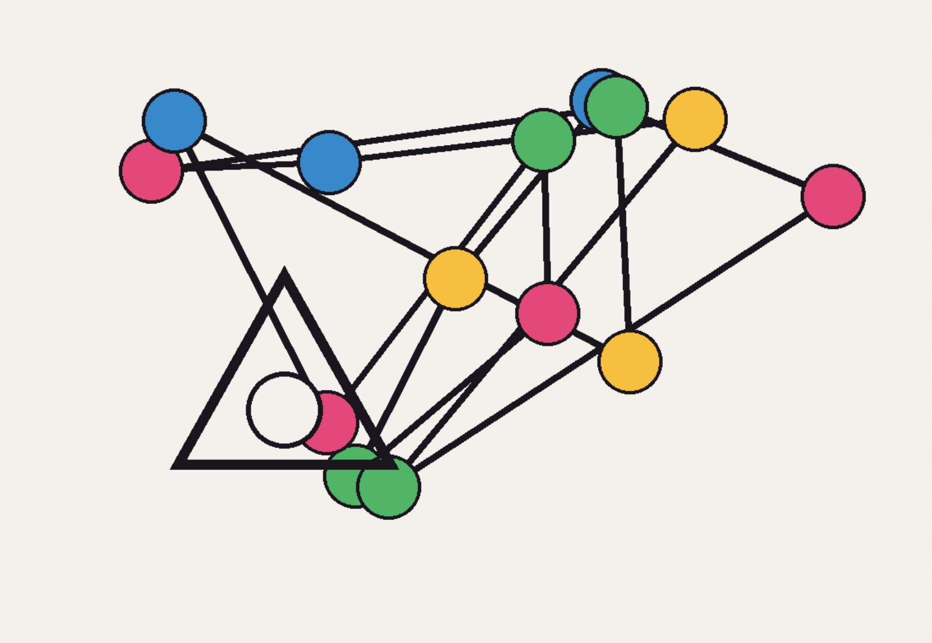

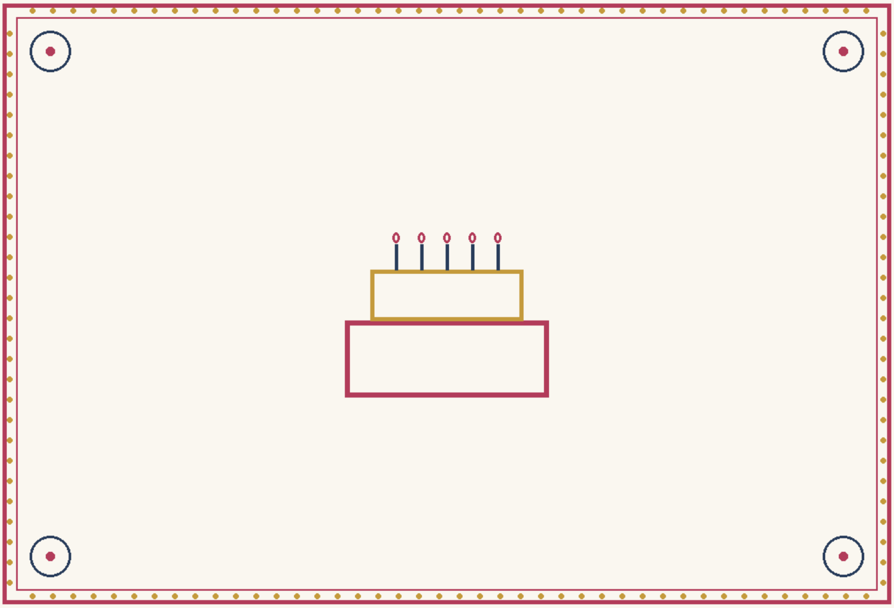

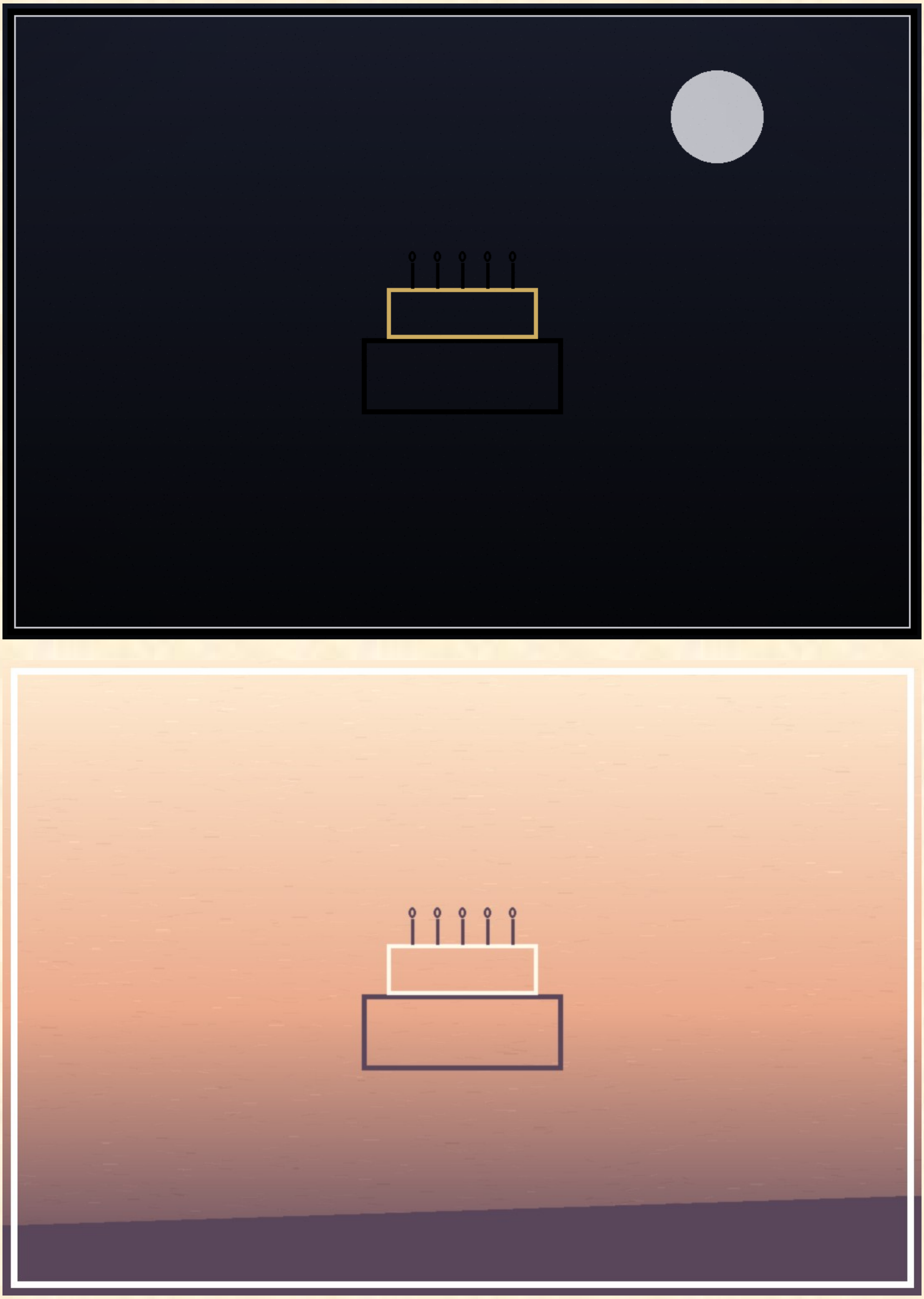

चित्र 7

ओमक जन्मदिन माने मंशाक सेहो पावनि। ओमक माए भोरेसँ तैयारी करथि — आ एकटा काज कहियो नहि बिसरथि: मंशा लेल अलगसँ उपहार कीनि कऽ राखब। 'बेटी बिनु उपहारक घुरत?' — ओ कहथि।

आ ओम्हर महुआ मंशाकेँ नहा-सोना कऽ, नव फ्रॉक पहिरा कऽ, समयसँ पहिने ओमक दरबज्जापर पहुँचा दैत छलि। घण्टी बजैत, दरबज्जा खुजैत, आ मंशा 'हैप्पी बर्थडे ओम!' चिचियाइत भीतर दौड़ि जाइत छलि — जेना ओ अतिथि नहि, घरक बेटी हो।

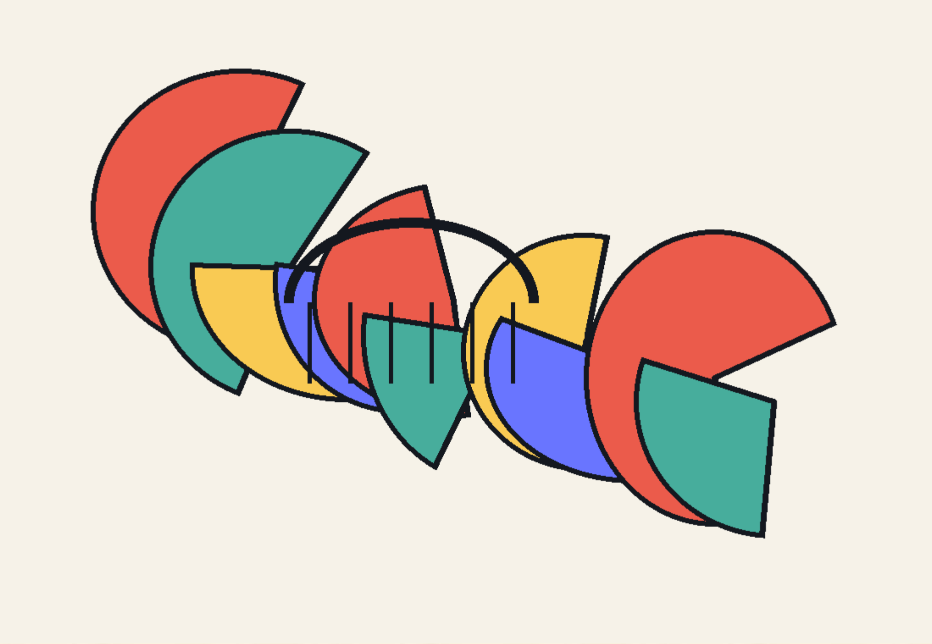

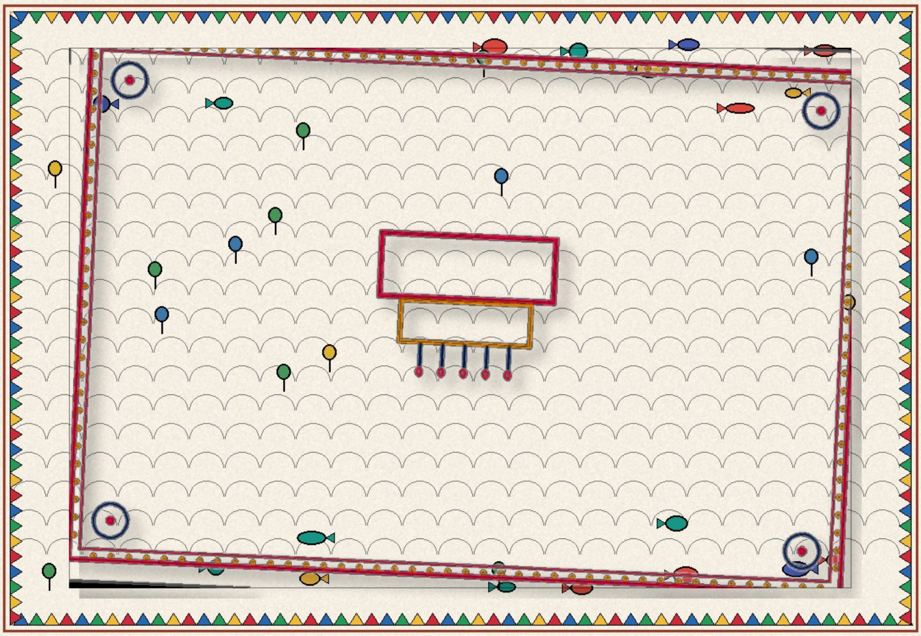

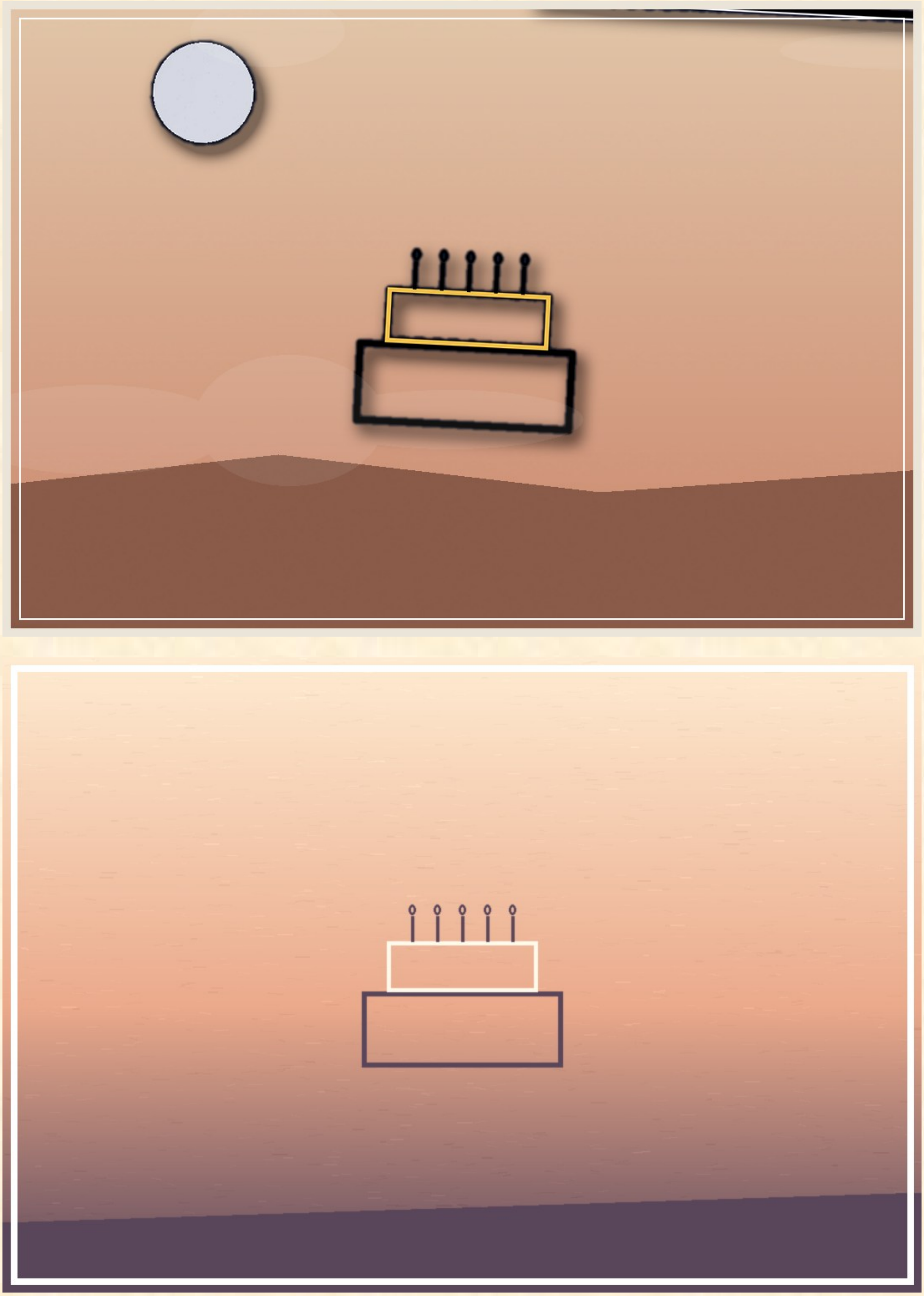

चित्र 8

केक कटैत, ताली बजैत, आ फेर दुनू बच्चा कोनमे बैसि कऽ अपन-अपन हिस्साक केक एक-दोसराकेँ खुअबैत छल। ओमक माए ई दृश्य देखि सभ बेर वैह बात सोचथि — दोस्ती सिखाओल नहि जाइत छै, ई अपने जनमैत छै।

एहि बरख दुनूक चारिम बरख पूरल छल आ पाँचम चढ़ल। चारि बरख — माने पूरा जिनगीक दोस्ती, जँ जिनगी चारिये बरखक हो। आ ठीक एही पाँचम बरखमे खिस्सामे ओ मोड़ आएल, जकरा लेल ई खिस्सा लिखल गेल।

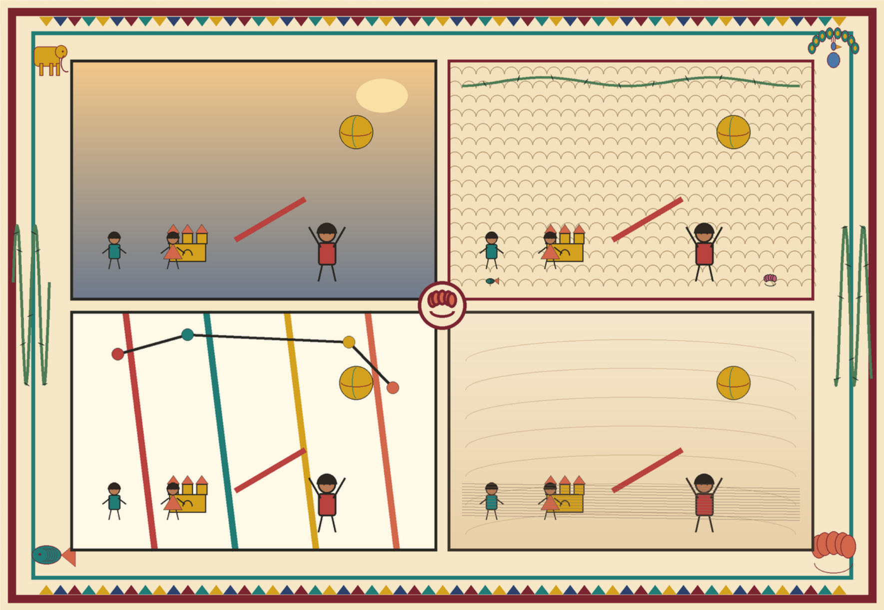

अध्याय ५ : नव बच्चा

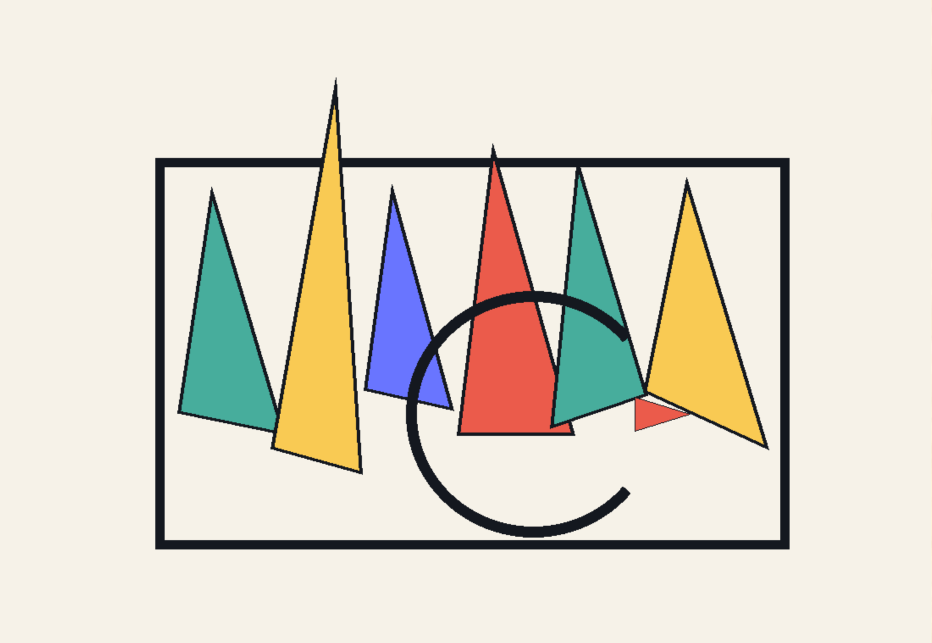

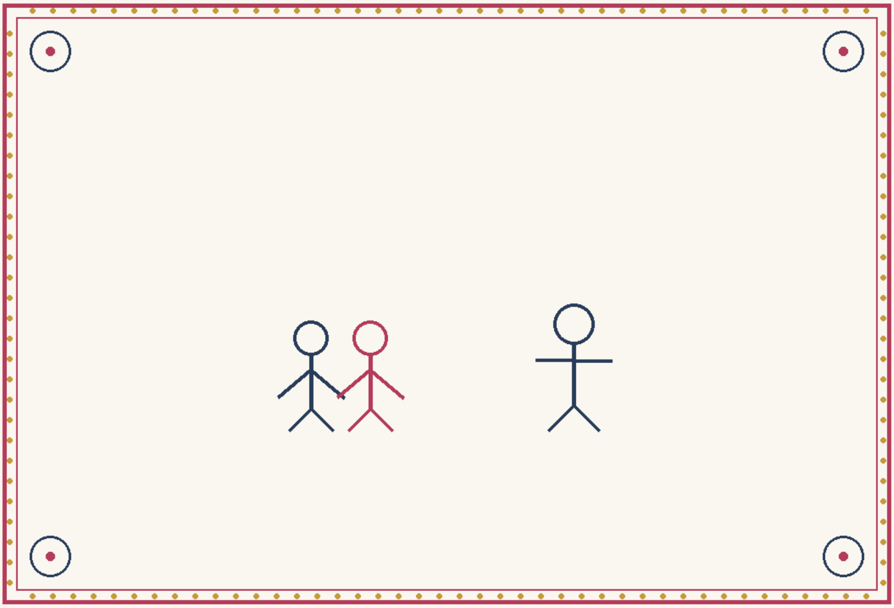

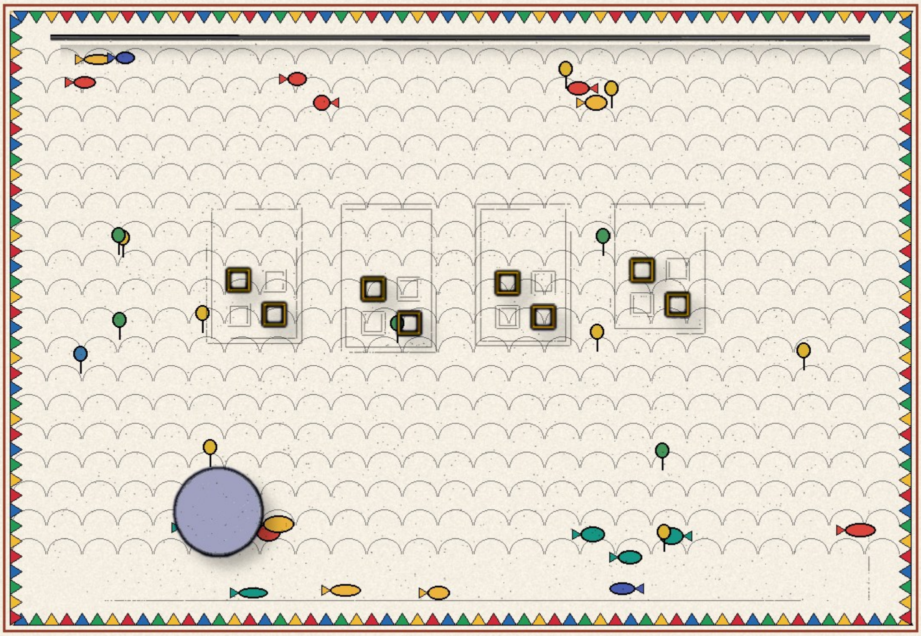

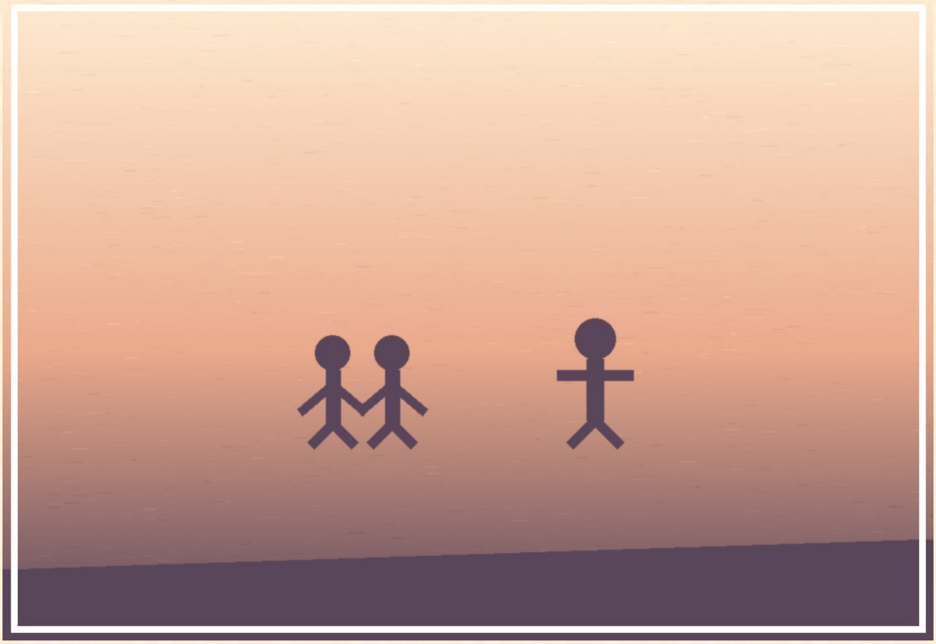

चित्र 9

ओहि मासमे परिसरमे एकटा नव परिवार आएल, आ संगमे आएल एकटा नव बच्चा — सुसेन। उमेरमे ओम-मंशासँ कनिये पैघ, देहमे मजगूत, आ जीहमे काँट।

पहिले दिनसँ सुसेनक खेल अलग छल। ओ खेलाइत कम छल, खेल बिगाड़ैत बेसी। ककरो साइकिलक घण्टी टुनटुना कऽ पड़ा जाए, ककरो बालूक घर पएरसँ मेटा दिअए, ककरो नाम बिगाड़ि कऽ बजाबए। पार्कक हवा, जे आइ धरि हल्लुक छल, कनी भरिगर भऽ गेल।

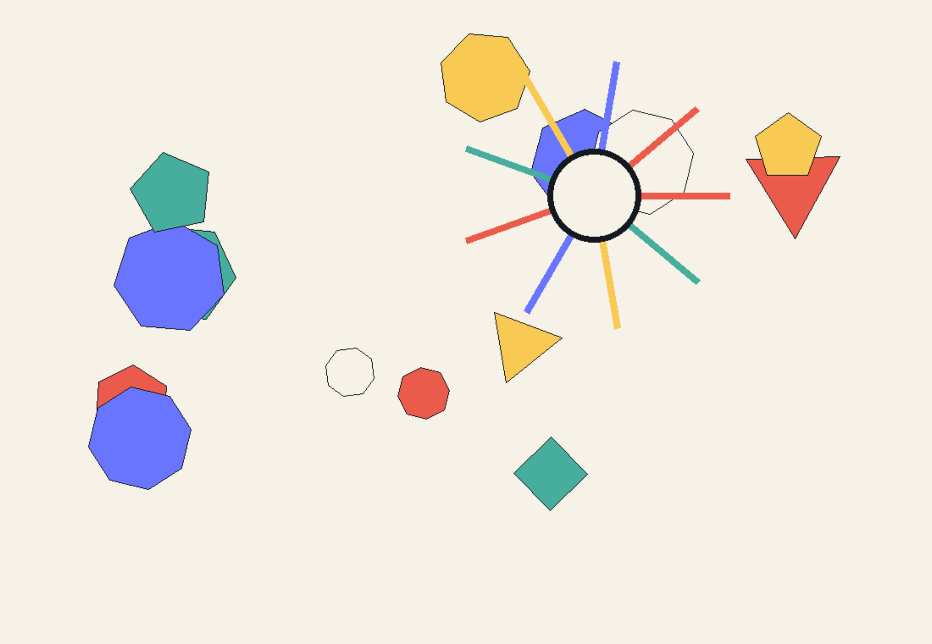

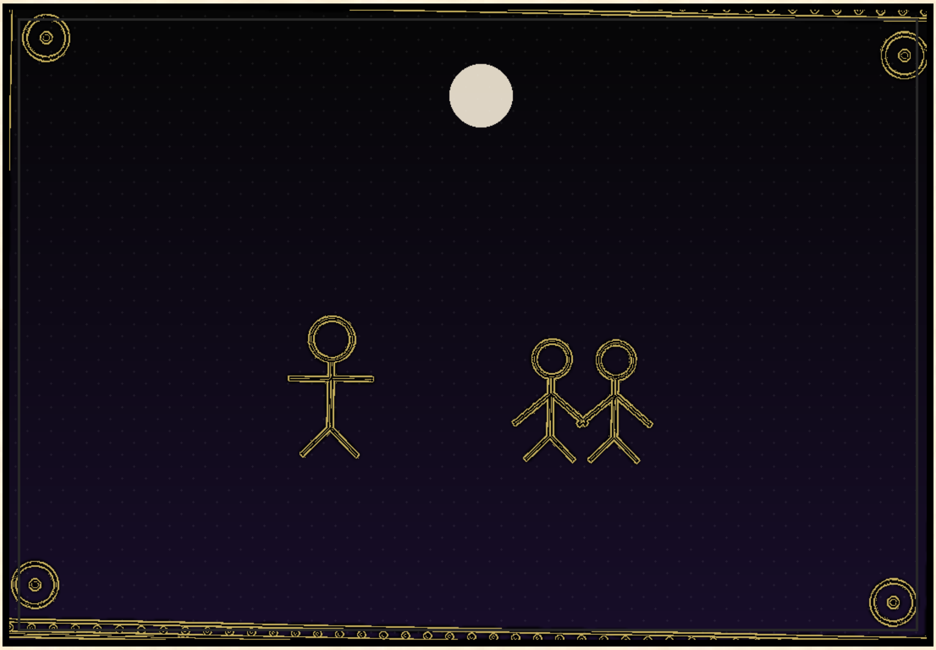

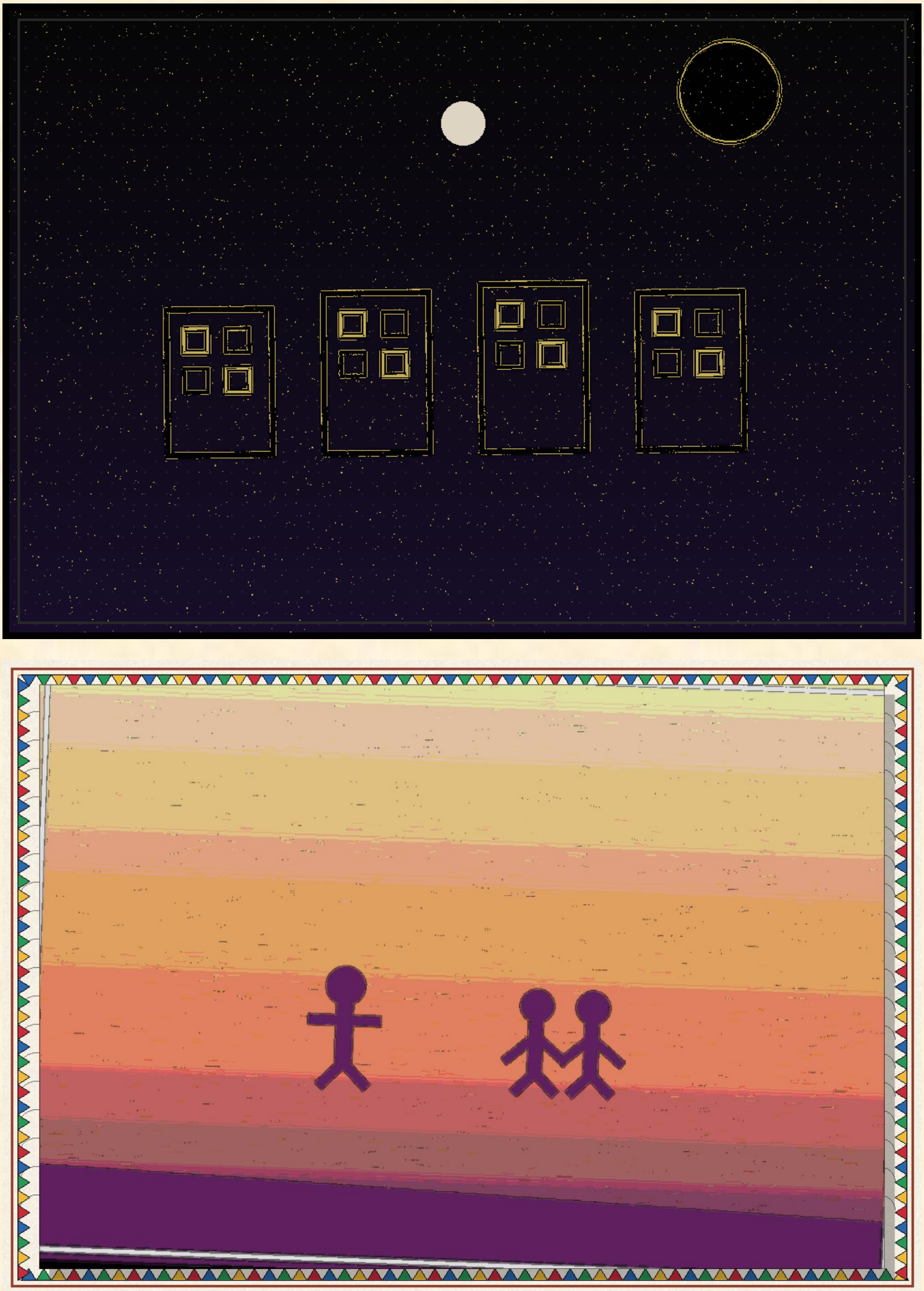

चित्र 10

बड़का लोक सभ कहलक, 'नव अछि, आस्ते-आस्ते सीखि जाएत।' मुदा बच्चा सभक संसदमे खुसुर-फुसुर शुरू भऽ गेल — 'सुसेनसँ दूरे रहह।' केओ ओकरा जबाब नहि दैत छल, कारण जबाब दिअए त' के?

आ जेना सदिखन होइत अछि — बदमाश सभसँ पहिने ओकरे ताकैत अछि जे सभसँ शान्त हो। सुसेनक आँखि पार्कक सभसँ चुप बच्चापर गड़ल — ओमपर। आ ओमक ढाल बनि कऽ जे सोझाँ आएल, से छलि दुजुट्टीबाली मंशा।

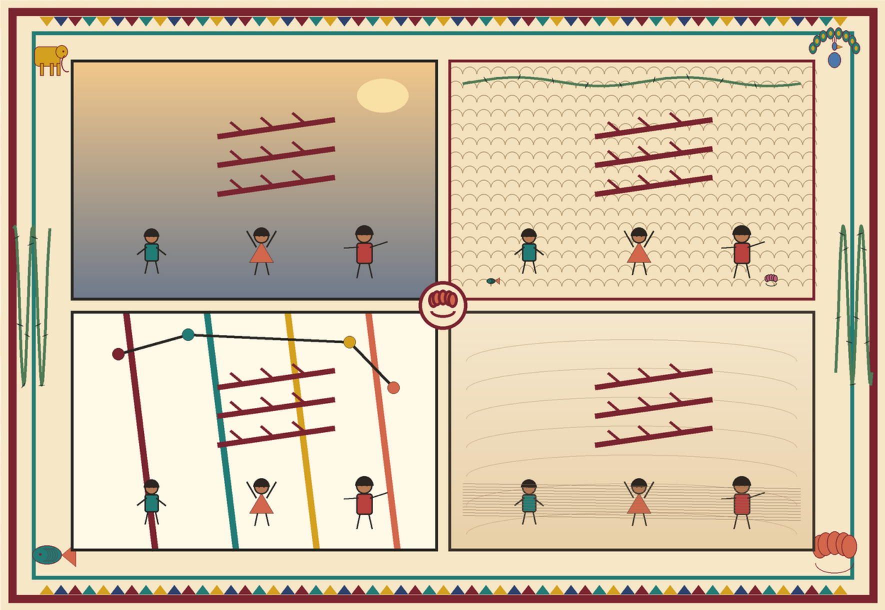

अध्याय ६ : काँटबला शब्द

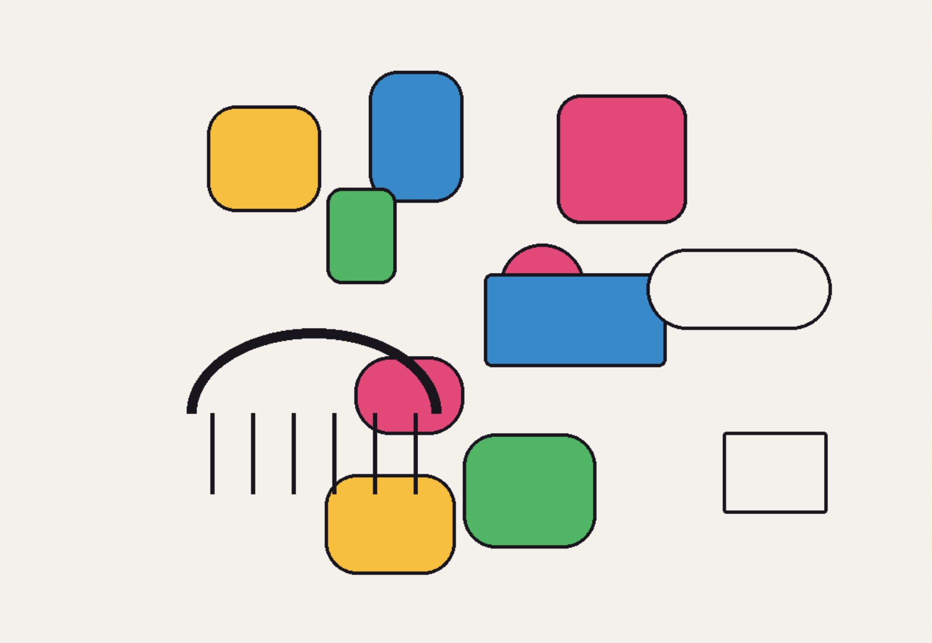

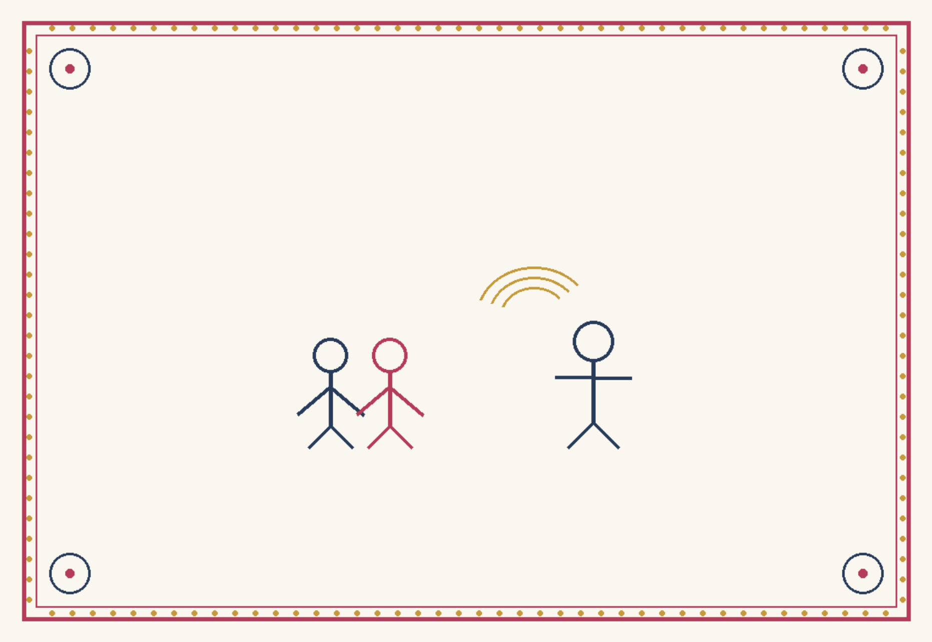

चित्र 11

शुरुआत छोट-छोट काँटसँ भेल। 'गै मंशा, दुजुट्टी किए बन्हने छैँ?' मंशा तड़कि कऽ उत्तर देलक, 'तोरा की?' — आ आगाँ बढ़ि गेलि।

दोसर साँझ फेर — 'गै मंशा, मुँह किए फुलेने छैँ?' 'मुँह किए फुलेने रहब?' — मंशाक स्वरमे आब चिड़चिड़ी छल। महुआ दूरसँ देखैत छलि; ओकर हाथमे झुलाक रस्सी कनी कसा गेल।

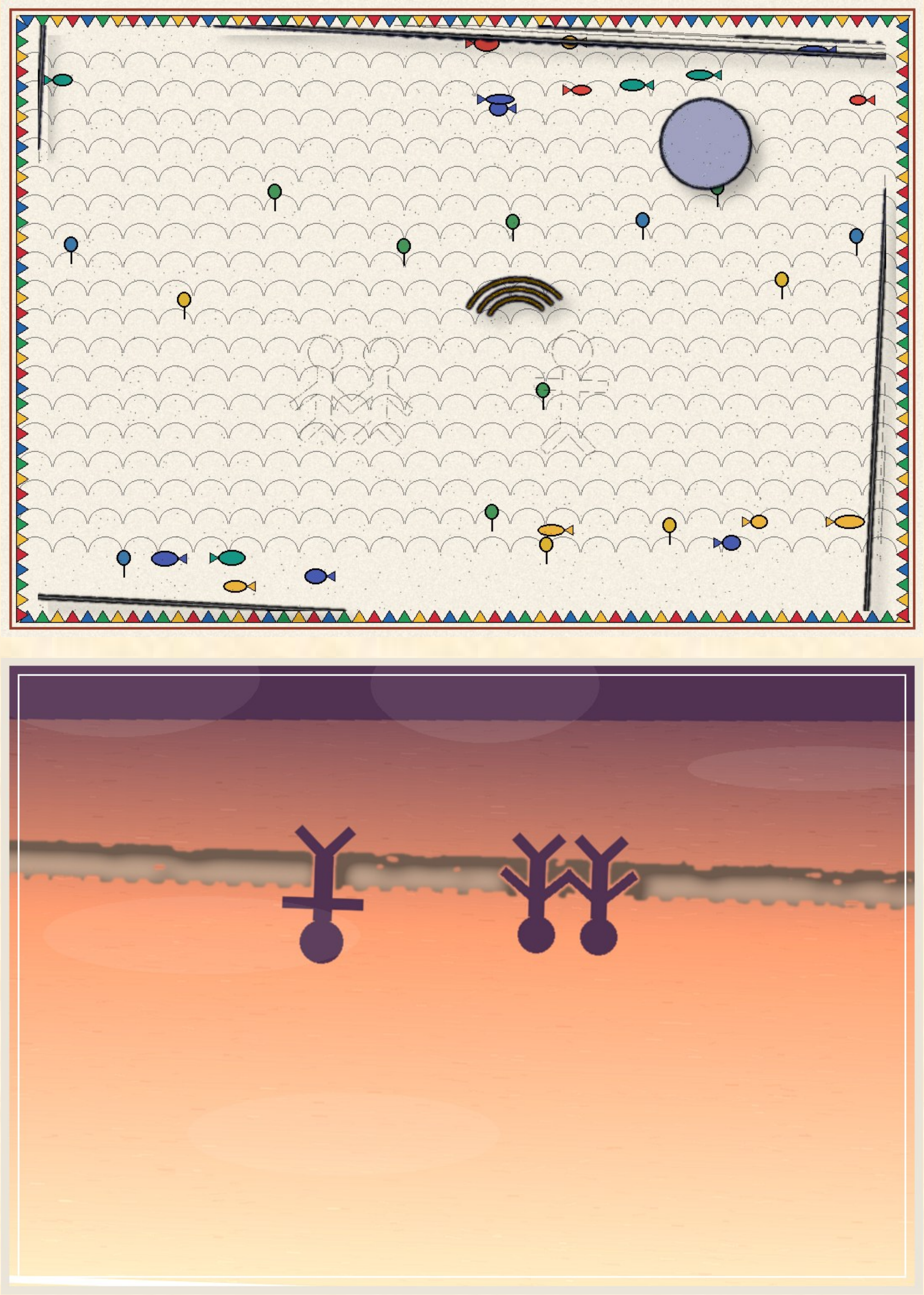

चित्र 12

सुसेनकेँ बुझा गेल छलै जे मंशा जबाब दैत अछि — आ जे जबाब दैत अछि, तकरा किचकिचेबामे मजा अबैत छै। मुदा ओकरा ईहो बुझा गेल छलै जे मंशाक सभसँ नरम ठाम कतय अछि। तेँ तेसर दिन ओ तीर सोझे ओही ठाम चलौलक।

'मंशा गै, तोहर दोस ओम किए एहन गन्दा छौ?' — गन्दा। एक्कहि शब्द। ओम ओतहि ठाढ़ छल, हाथमे बालूक खेलौना नेने। ओ किछु नहि बाजल। ओकर आँखि एक बेर अपन कपड़ा दिस गेल, फेर सुसेन दिस, फेर जमीन दिस। आ मंशाक भीतर, ओही क्षण, बारूदमे चिनगी पड़ि गेल।

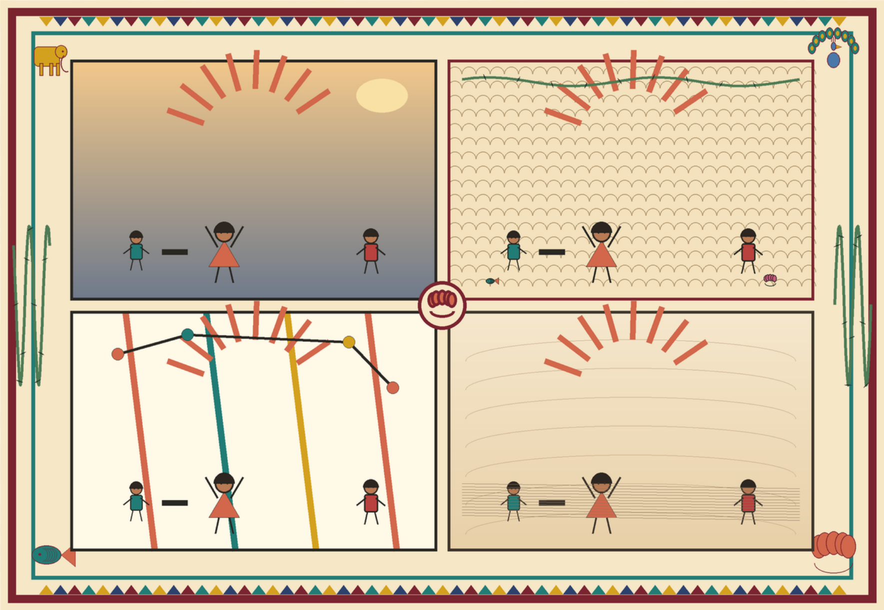

अध्याय ७ : मंशाक गर्जन

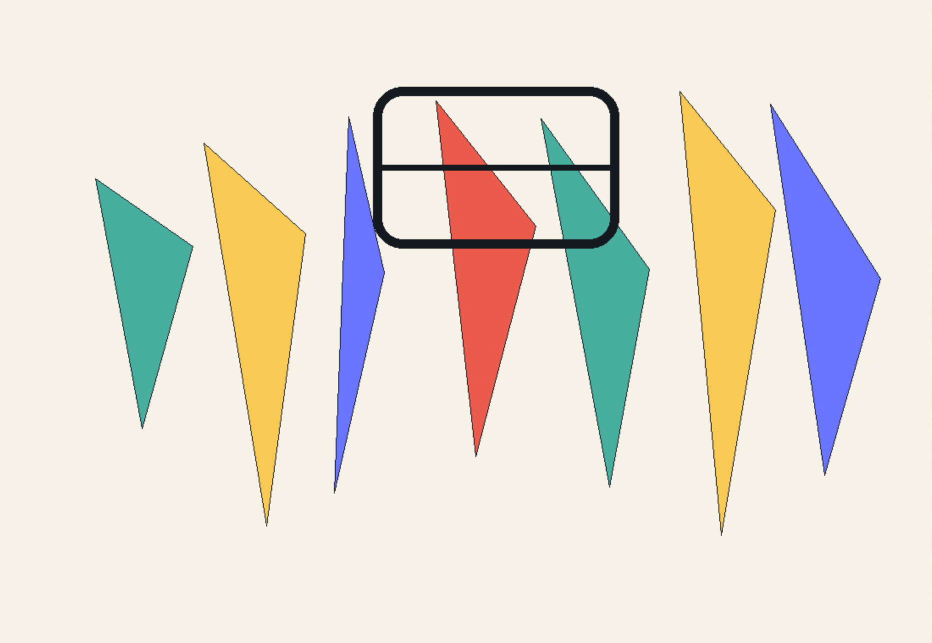

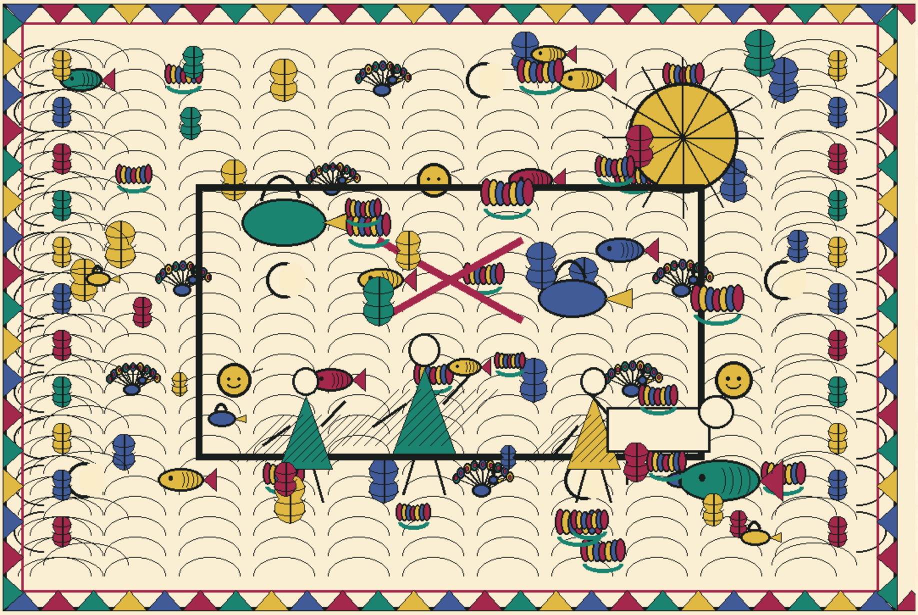

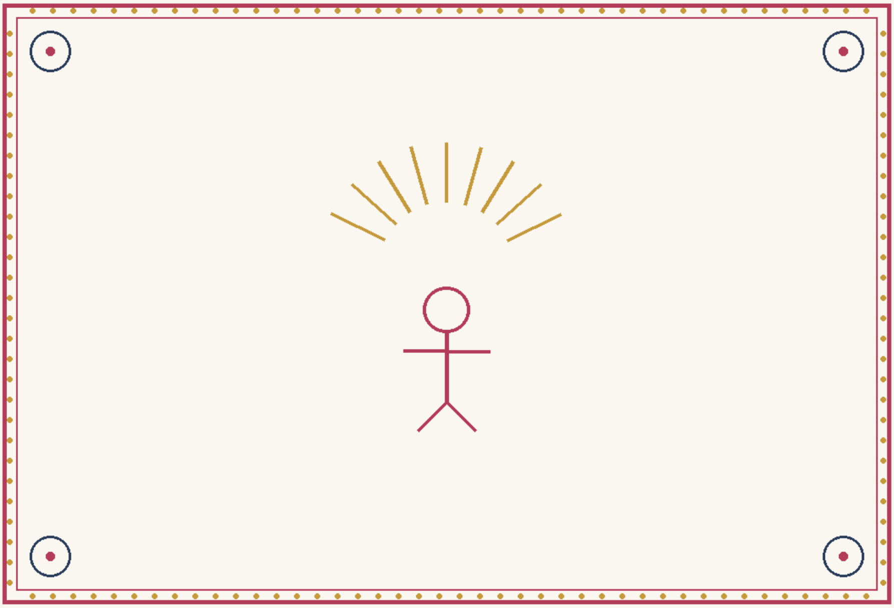

चित्र 13

आब त' मंशाकेँ ततेक तामस भेलै जकर कहब नहि। मुँह लाल, दुजुट्टी तनल, आ स्वर एतेक ऊँच जे झुला सभ रुकि गेल, गेन्द सभ थम्हि गेल, पूरा पार्क कान बनि गेल।

'ओम हमर दोस छी! जे एकरा गन्दा कहैए, से अपने गन्दा अछि!'

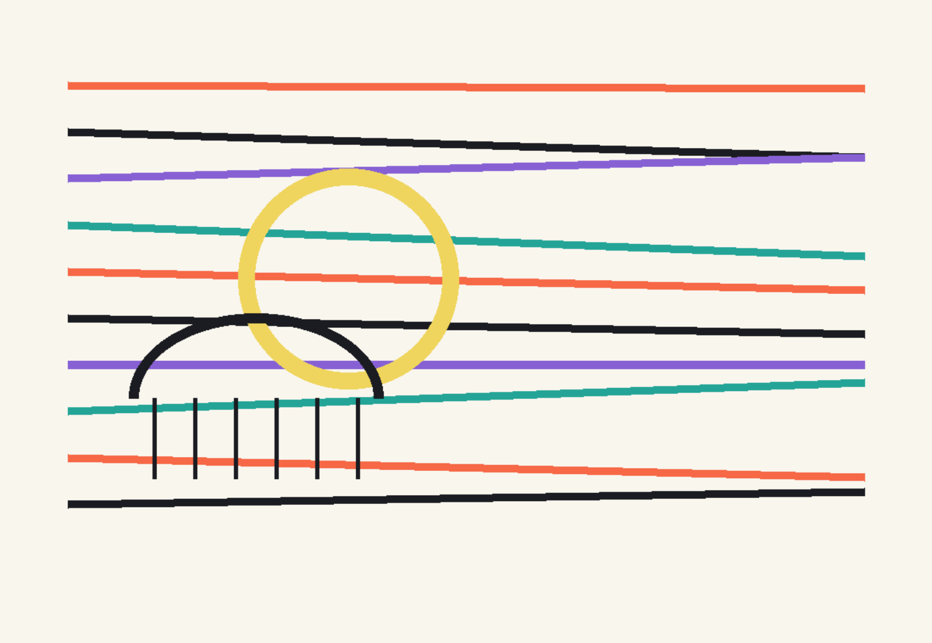

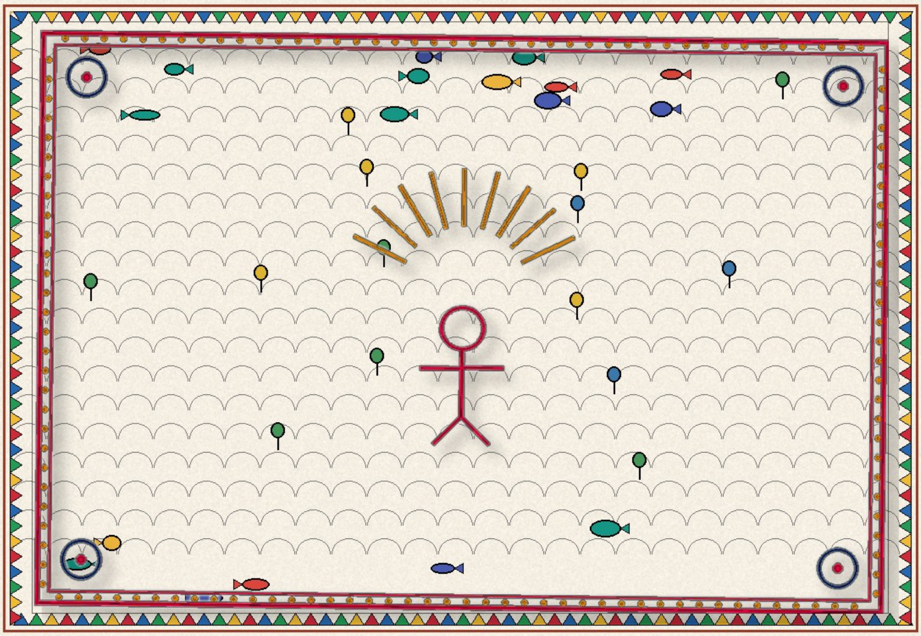

चित्र 14

वाक्य दूटा, मुदा वजन हजार मोनक। सुसेन — जे आइ धरि खाली दोसराकेँ किचकिचायब जनैत छल, स्वयं किचकिचाइ नहि छल — पहिल बेर सकपका गेल। पार्कक बच्चा सभ, जे आइ धरि चुपचाप सहैत छल, पहिल बेर देखलक जे जबाब एना सेहो देल जाइत छै — बिनु हाथ उठौने, खाली साँच बाजि कऽ।

आ मंशा ओतहि नहि रुकलि। ओ ओमक हाथ पकड़लक — कस्सि कऽ, जेना कहैत हो 'ई हाथ हम नहि छोड़ब' — आ माथ उठौने पार्कसँ आगाँ बढ़ि गेलि। पाछाँ रहि गेल सुसेन, अपन कठहँसी नेने, जे आब ओकरे मुँहपर अनसोहाँत लागि रहल छल।

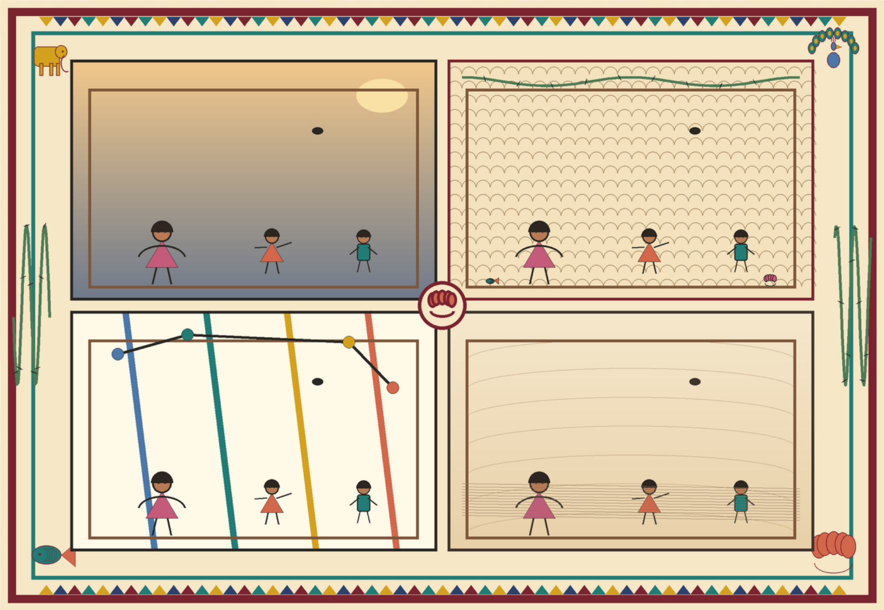

अध्याय ८ : शिकाइत

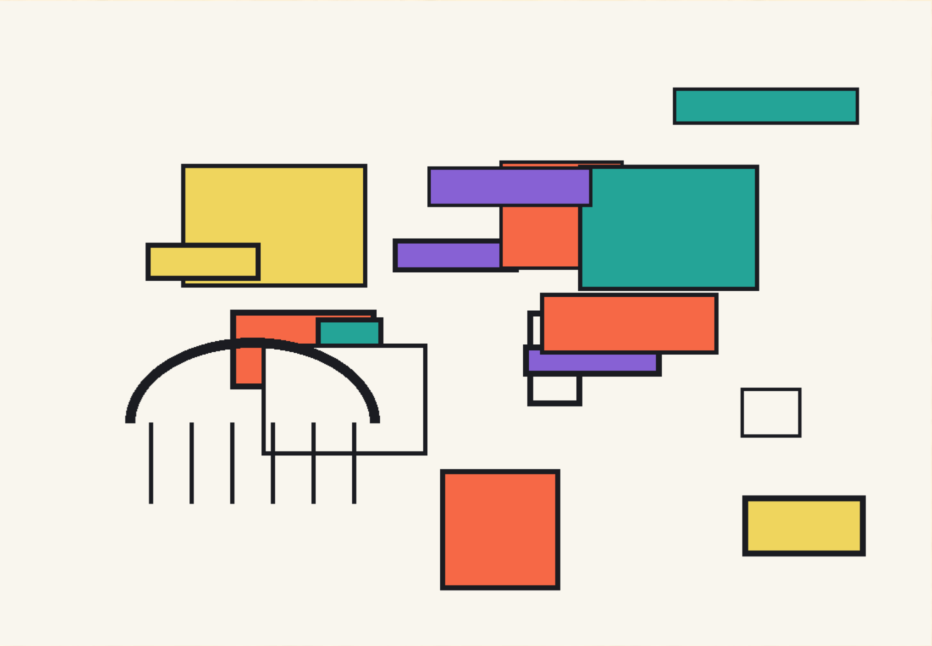

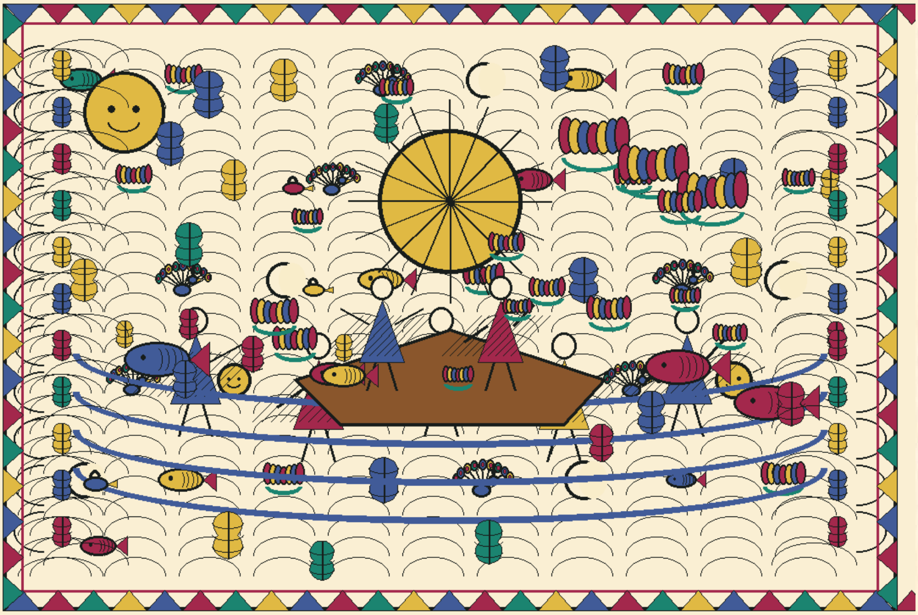

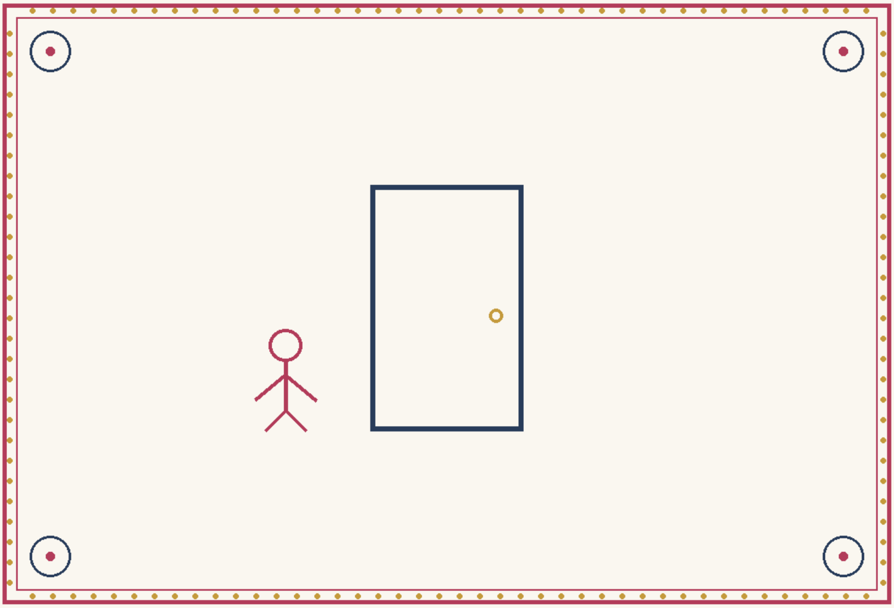

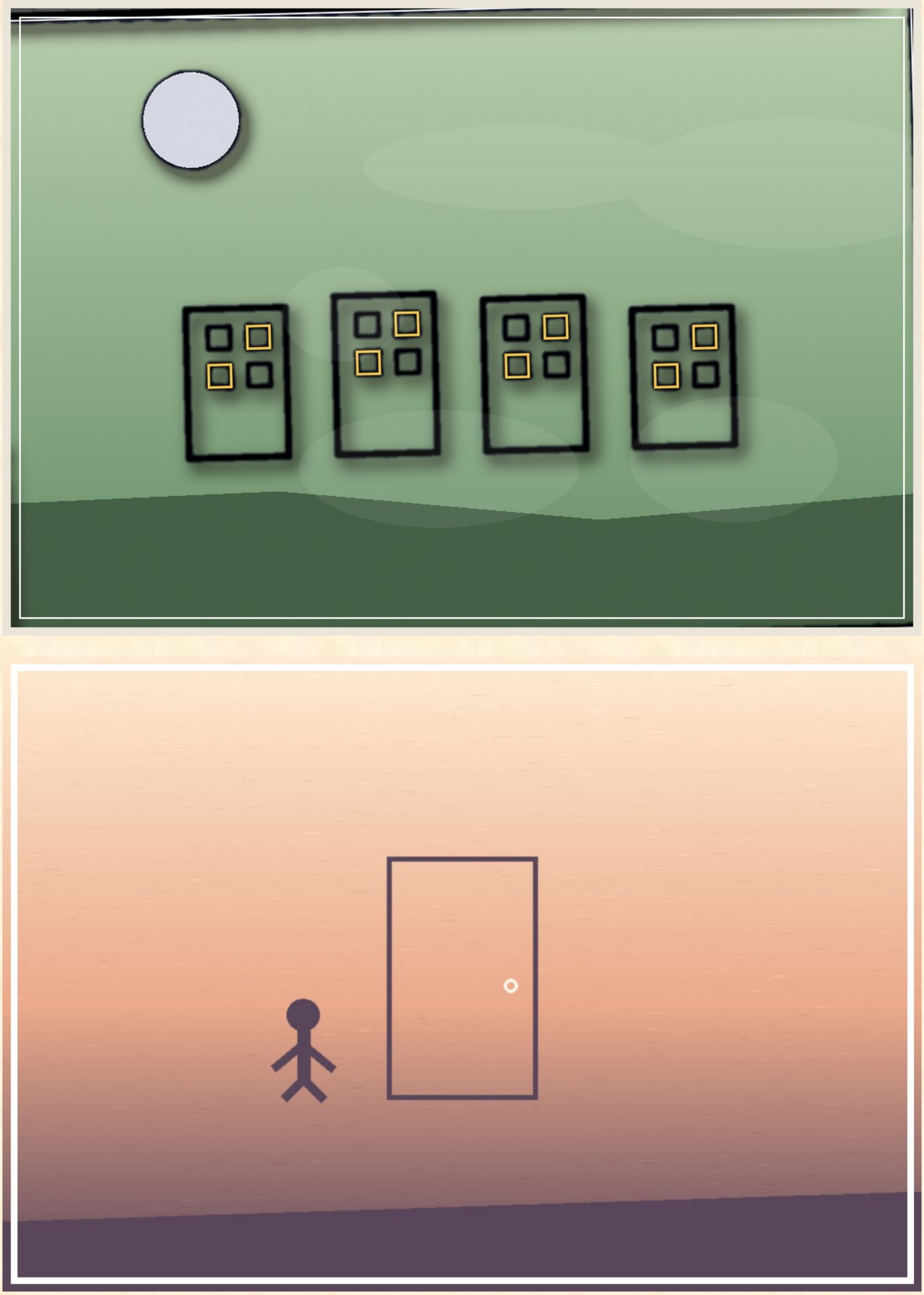

चित्र 15

मंशा सोझे ओमक घर पहुँचलि आ सभटा गप ओमक माएकेँ कहि सुनौलक — पूरा घटना, अपन गर्जन, सुसेनक मुँह — किछु नहि छोड़लक। मुदा अन्तमे ओ जे कहलक, से शिकायत सुसेनक विरुद्ध नहि छल।

'हम सुसेनपर तमसाइ छलहुँ, आ ई चुपचाप ठाढ़ छल!' — मंशाक आंगुर ओम दिस छल। ओकरा ओमक चुप्पी सुसेनक गारिसँ बेसी खटकल छलै। दोस लेल लड़ि गेलहुँ, आ दोसे नहि लड़ल — एहिसँ पैघ धोखा चारि बरखक करेज लेल आर की?

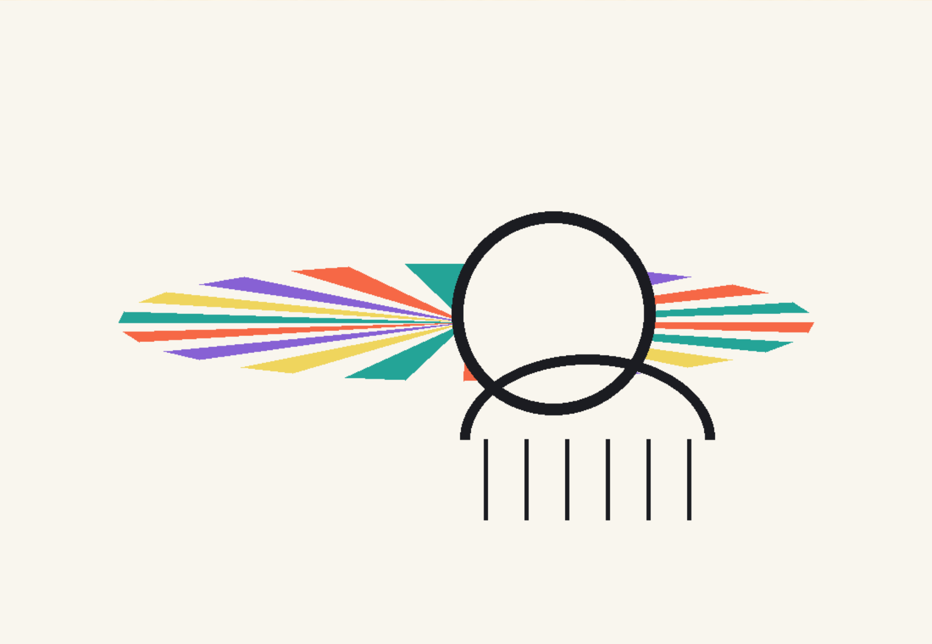

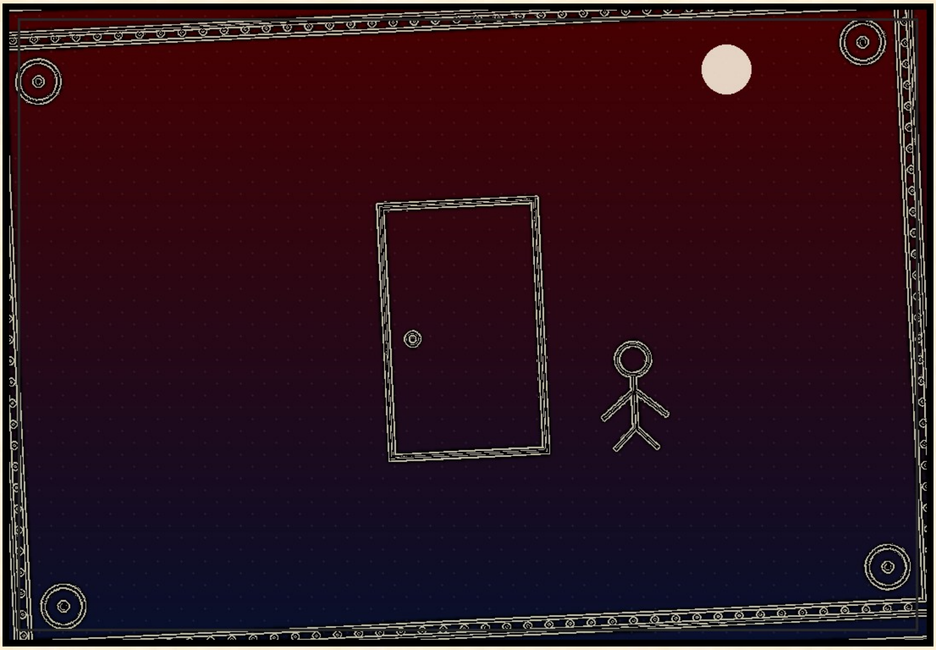

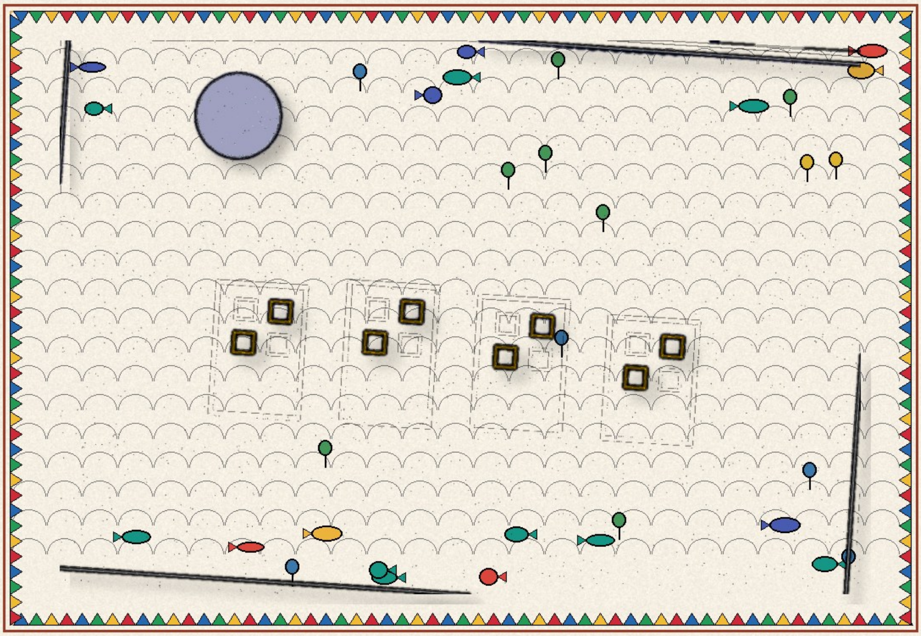

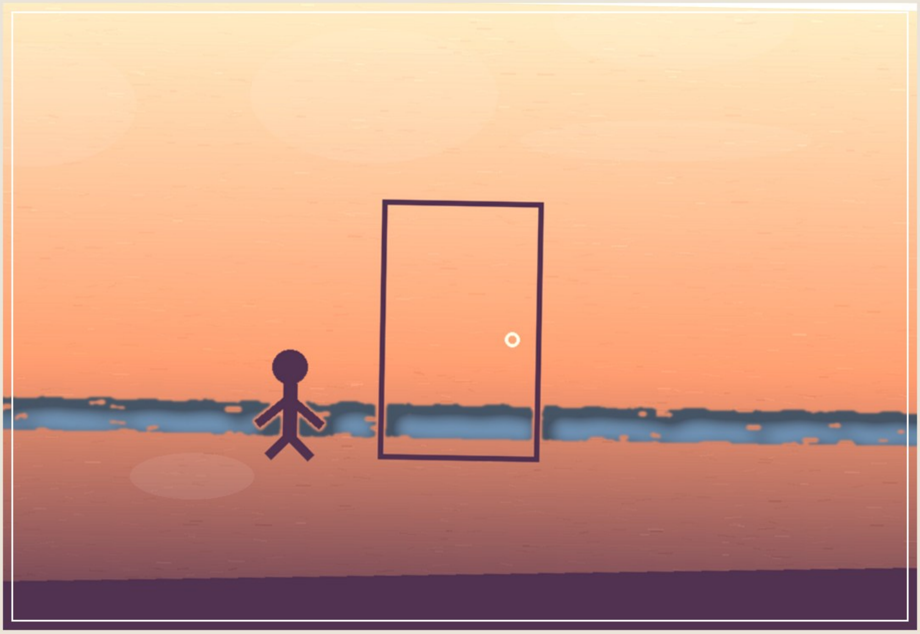

चित्र 16

ओमक माएक भौंह सेहो कनी तनि गेल। हुनको भीतर वैह प्रश्न उठल जे हर माएक भीतर उठितए। ओ ओम दिस घूमलीह — 'किए ओम? अहाँकँ सुसेन गन्दा कहलक, आ अहाँ चुपचाप ठाढ़ रहि गेलहुँ?'

घरमे सुन-सन्नाटा। मंशा डाँरपर हाथ धेने उत्तरक प्रतीक्षामे। माए आँखिमे प्रश्न नेने। आ ओम — पाँचम बरखमे प्रवेश करैत ओम — कनी काल चुप रहल, जेना शब्द सभकँ सजा रहल हो। फेर ओ बाजल। आ जे बाजल, से एहि खिस्साक हृदय थिक।

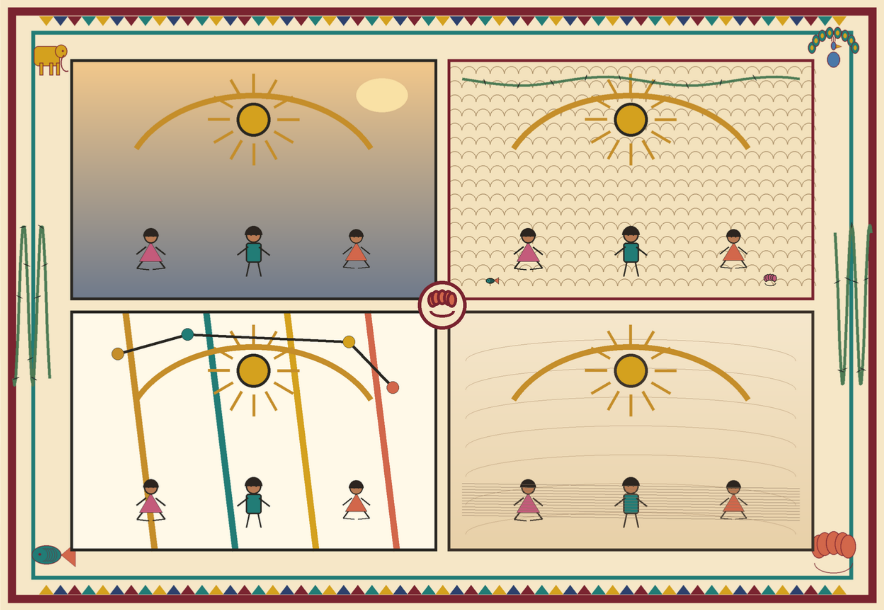

अध्याय ९ : बाल गुरुक उत्तर

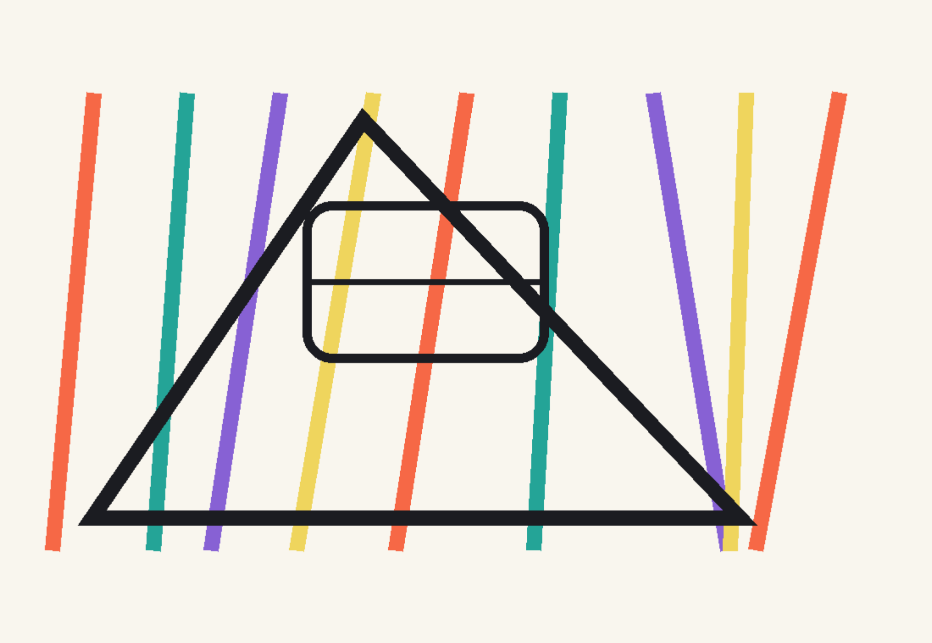

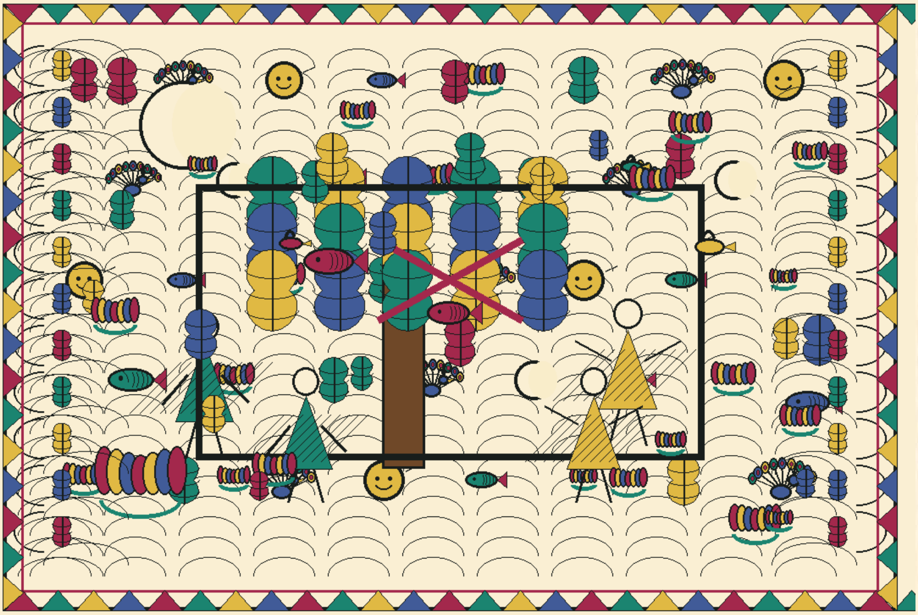

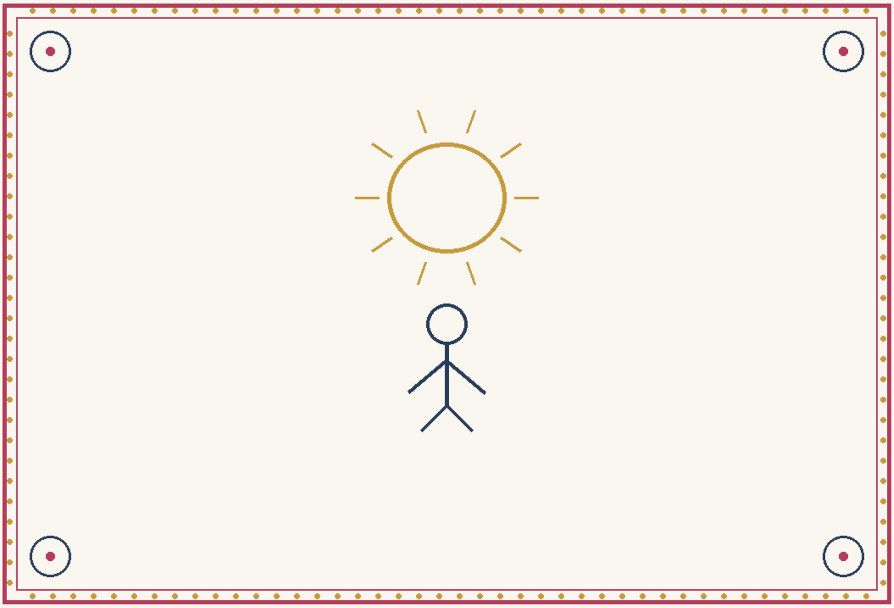

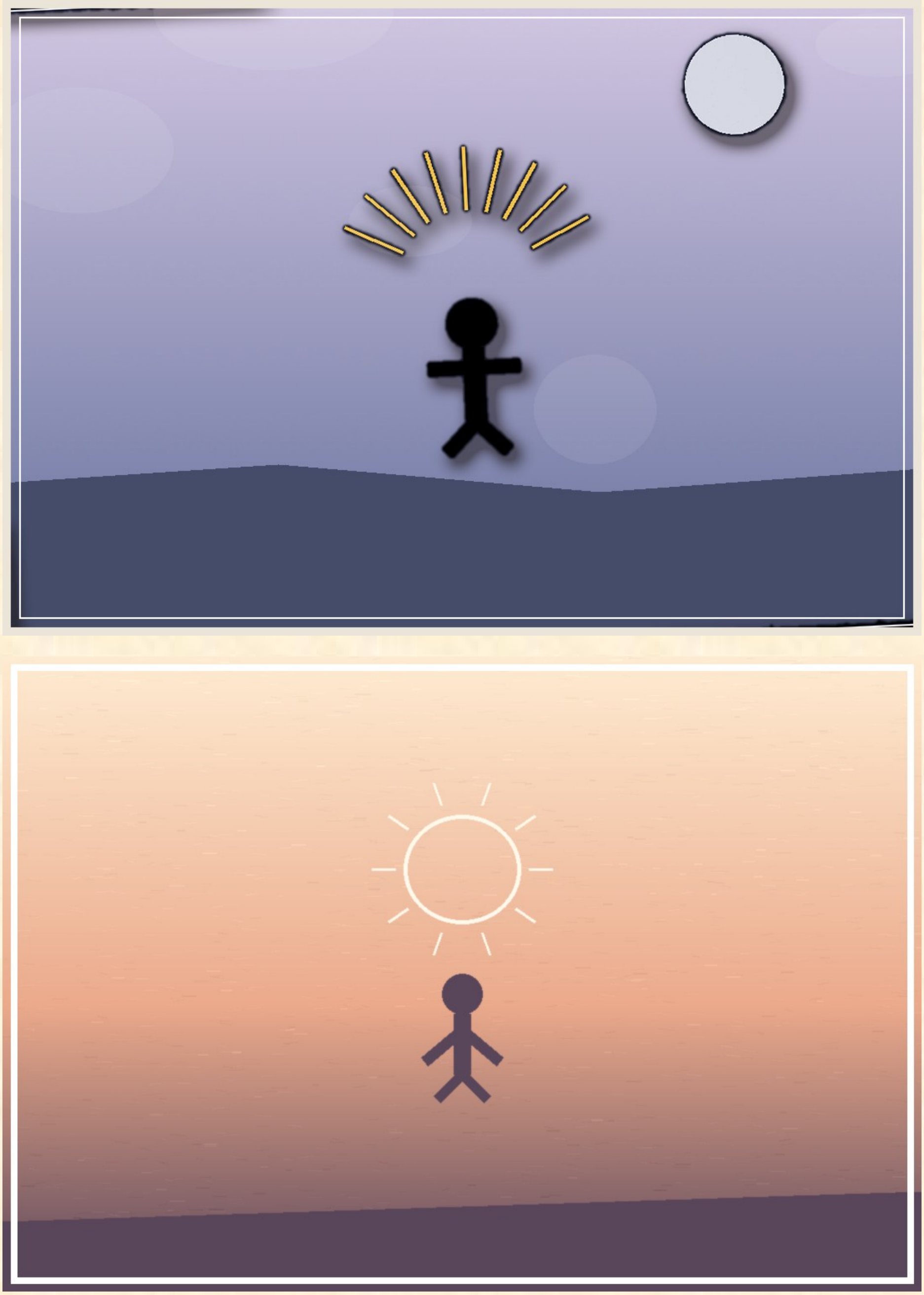

चित्र 17

'माए, ओ हमरा नै चिन्हैए। नव आएल अछि। तैं हमरा गन्दा कहलक। जखन ओ हमरा सभकेँ चीन्हि जाएत, त' थोड़बेक गन्दा कहत।'

बस। ने कोनो शिकायत, ने कोनो बदला, ने अपन सफाई। पाँच बरखक बच्चा गारिक जड़ि ताकि लेने छल — अज्ञान। जे चिन्हैत नहि अछि, वैह गन्दा कहैत अछि; चिन्हि लेत, त' कहबे नहि करत। एहि एक वाक्यमे क्षमा छल, धीरज छल, आ ओ भरोस जे दुनियाँपर सभसँ कठिन समयमे राखल जाइत अछि — जे लोक भीतरसँ खराब नहि, खाली अनचिन्हार होइत अछि।

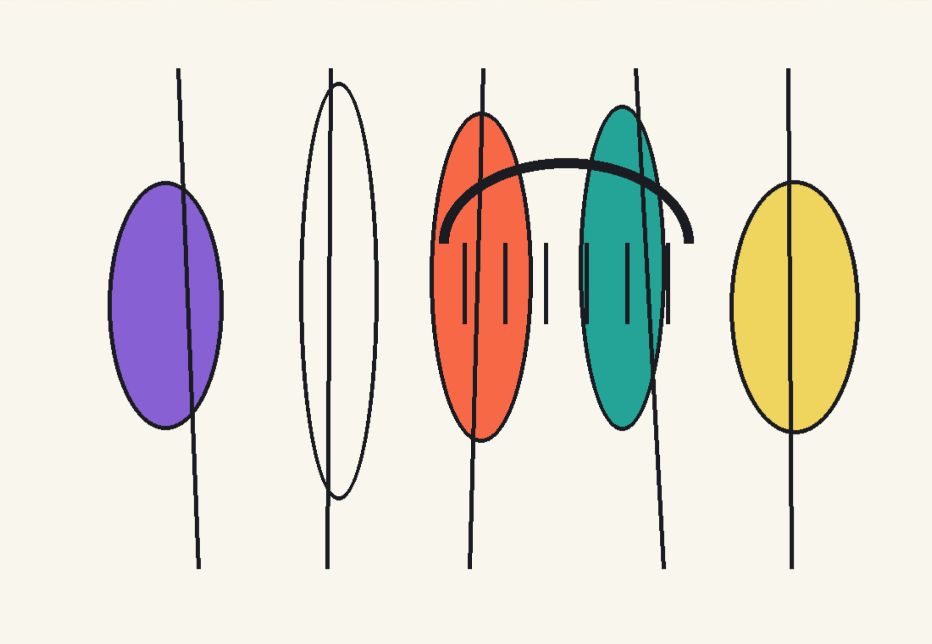

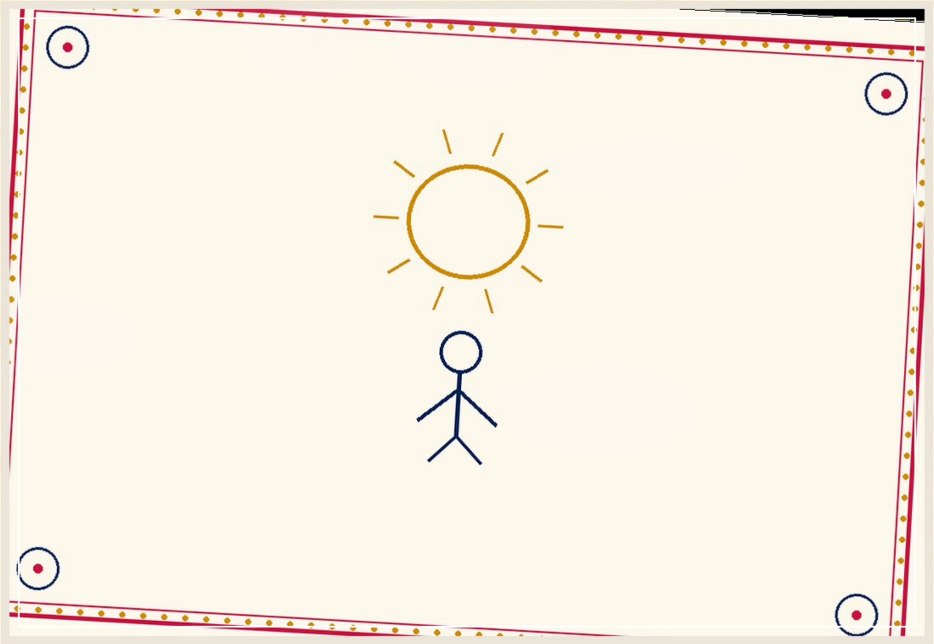

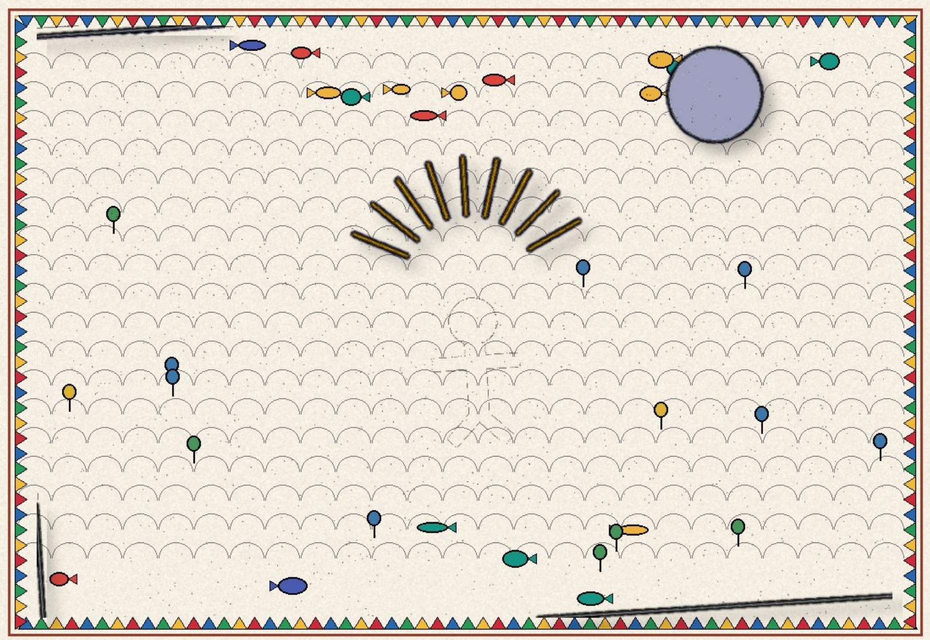

चित्र 18

मंशाक डाँरपरसँ हाथ अपने खसि पड़ल। ओकर सभटा तामस — जे सुसेनपर छल, फेर ओमपर — हवामे बिला गेल। कारण जकरा लेल ओ लड़लि, से त' लड़ाइयेसँ ऊपर ठाढ़ छल।

आ माए? माएक आँखिमे नोर आबि गेलन्हि। हुनको त' तामस आएल छलन्हि — जे हमर बेटा किए चुप रहि गेल, सुसेनकेँ किछु कहलक किए नहि। आ आब ओ अपने ओही तामसपर लजा रहल छलीह। बेटाकेँ लड़ब सिखेबाक छल हुनका — आ बेटा हुनका बुझब सिखा गेल। के गुरु, के चेला?

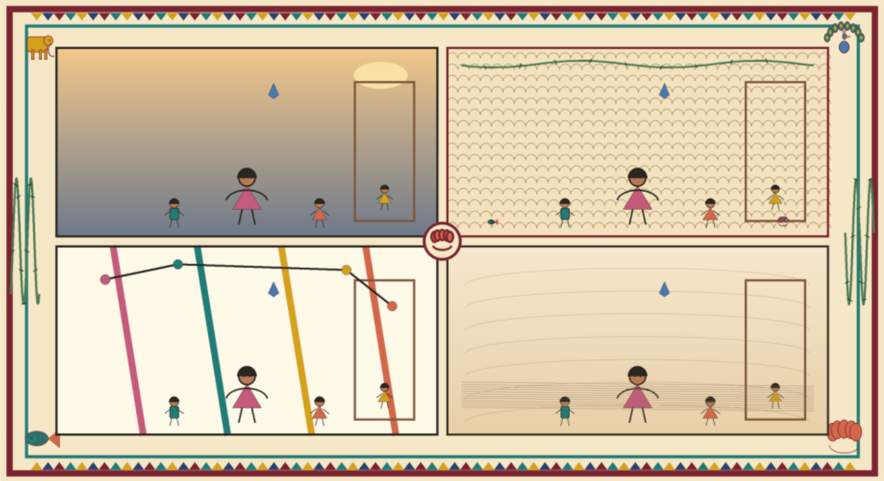

अध्याय १० : माएक नोर

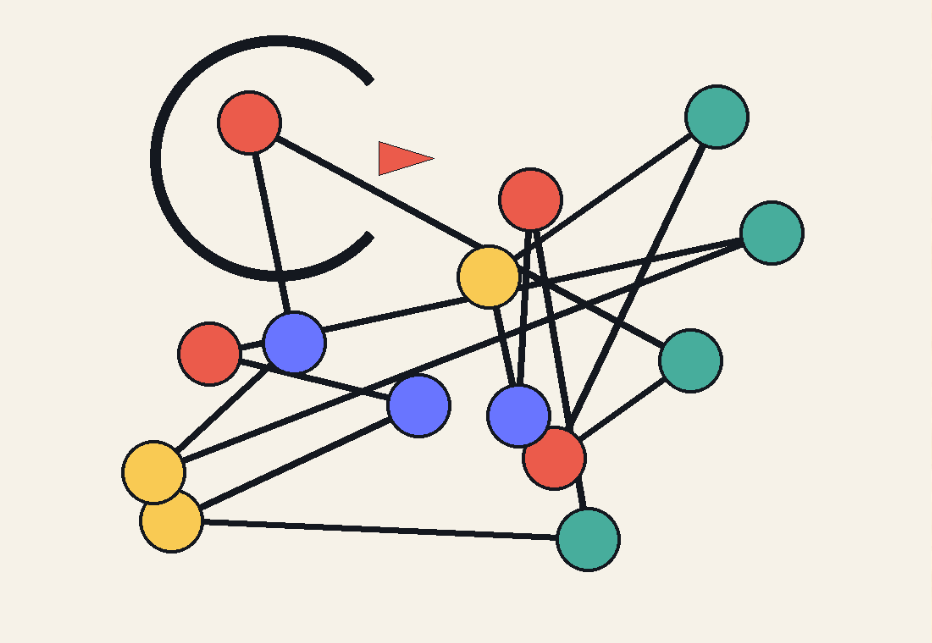

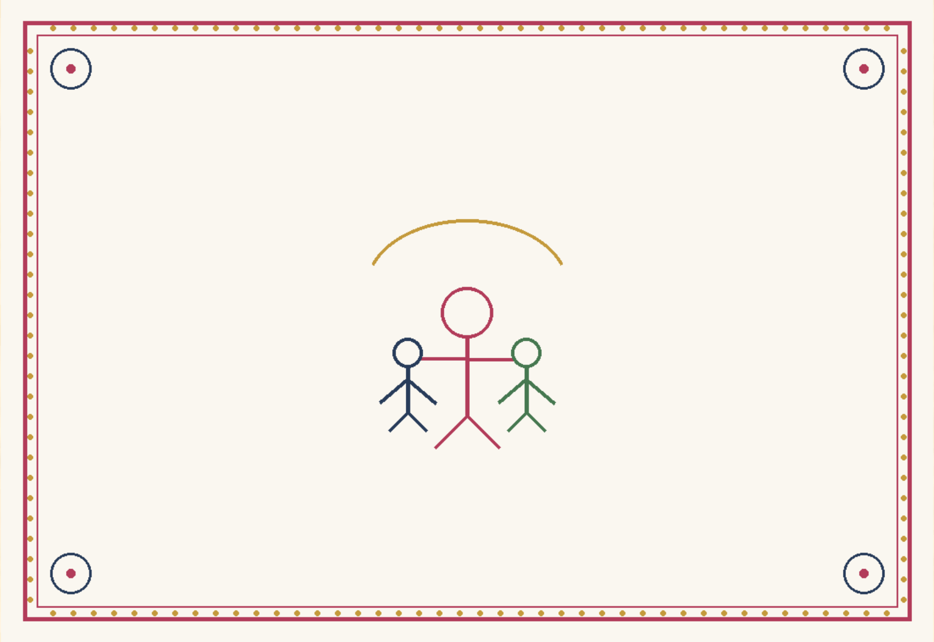

चित्र 19

ओ नोर दुखक नहि छल। ओ नोर ओहि क्षणक छल जखन कोनो माए अचानक देखैत अछि जे ओकर कोराक बच्चा भीतरसँ ओकरोसँ पैघ भऽ गेल अछि।

आ तखने हुनका मंशा देखाइ पड़लन्हि — दुजुट्टी अस्त-व्यस्त, गाल एखनो तामसे लाल, मुदा आँखिमे ओम लेल वैह पुरान फिकिर। देखियौ त' — ई कतेक निश्छल अछि! एकटा बच्चा, जे दोसक अपमानपर आगि बनि गेल; आ दोसर, जे ओही अपमानकेँ क्षमाक पानिसँ धो देलक। एक लग करेज, दोसर लग बोध — आ दुनू पाँच बरखसँ नीचाँ!

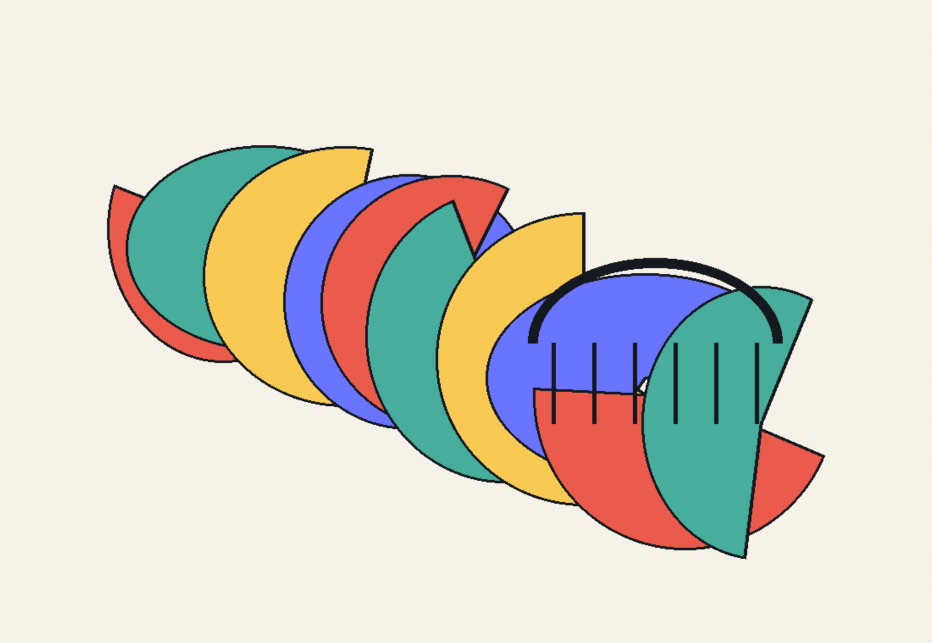

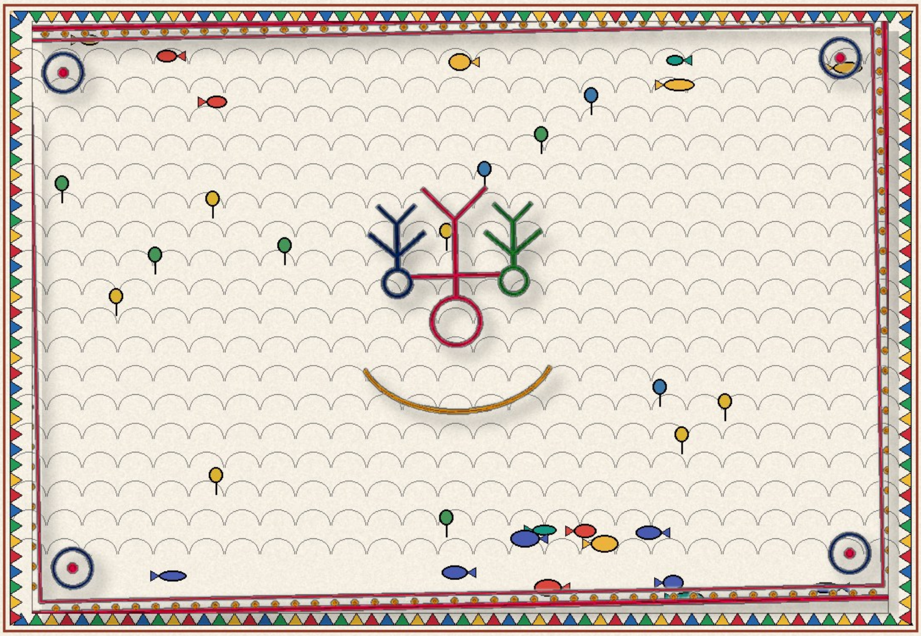

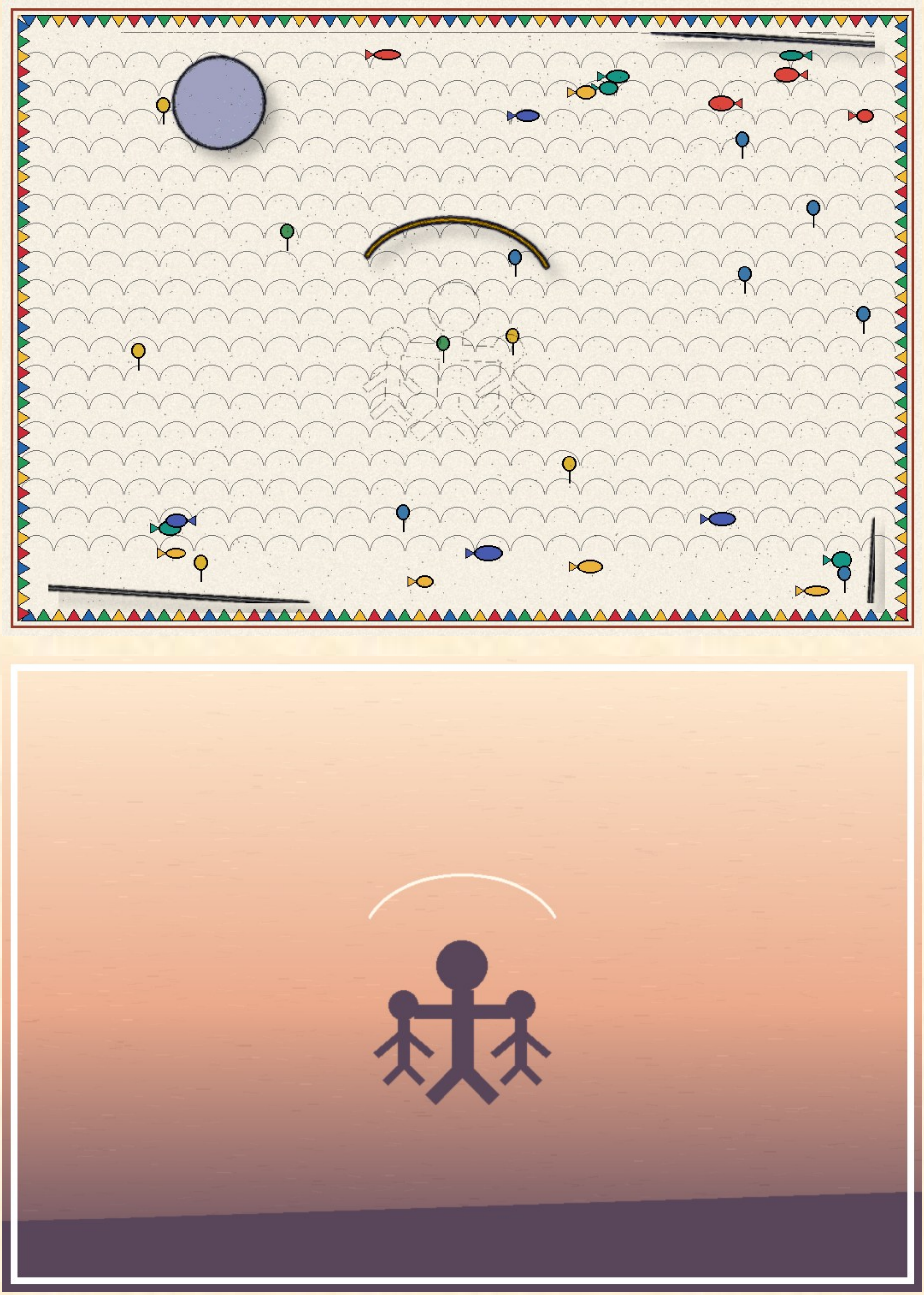

चित्र 20

माए दुनू बच्चाकेँ खींचि कऽ छातीसँ लगा लेलनि आ बेरा-बेरी चुम्मा लेबए लगलीह — ओमक माथपर, मंशाक दुजुट्टीपर। बाहर साँझ भऽ रहल छल, भनसाघरसँ भातक गन्ध आबि रहल छल।

ओहि साँझ ओमक माए मंशाकेँ अपने हाथे खुअओलनि आ जाइत काल दरबज्जा धरि छोड़ए गेलीह। महुआ नीचाँ प्रतीक्षामे ठाढ़ छलि। माए ओकरो माथपर हाथ फेरलनि — 'बुच्चीकेँ सम्हारि कऽ लऽ जैह।' तीन टा माए छलीह ओहि साँझ ओतय — एक जनम देनिहारि, एक पोसनिहारि, आ एक ओ, जे आइ अपन बेटासँ किछु सीखि कऽ ठाढ़ छलीह।

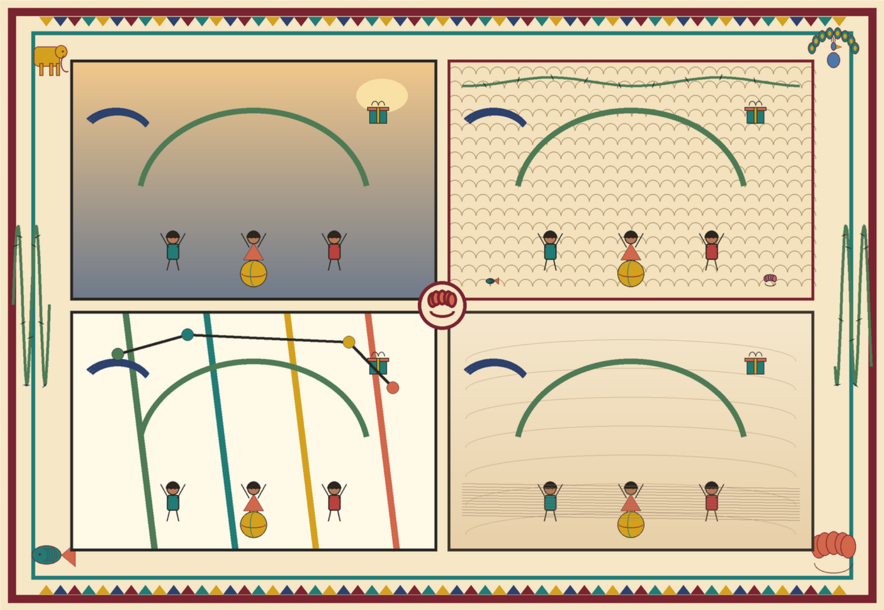

अध्याय ११ : चीन्हब

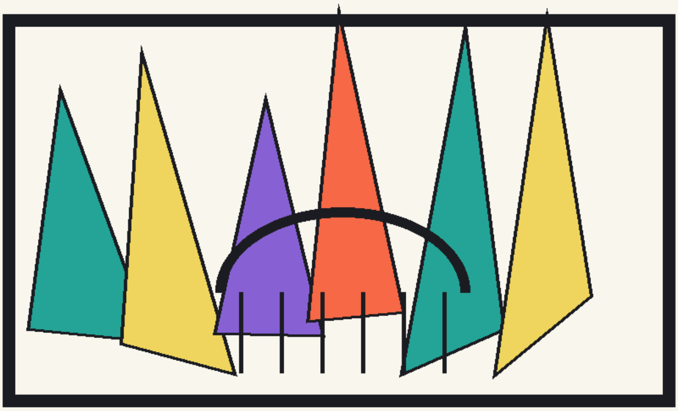

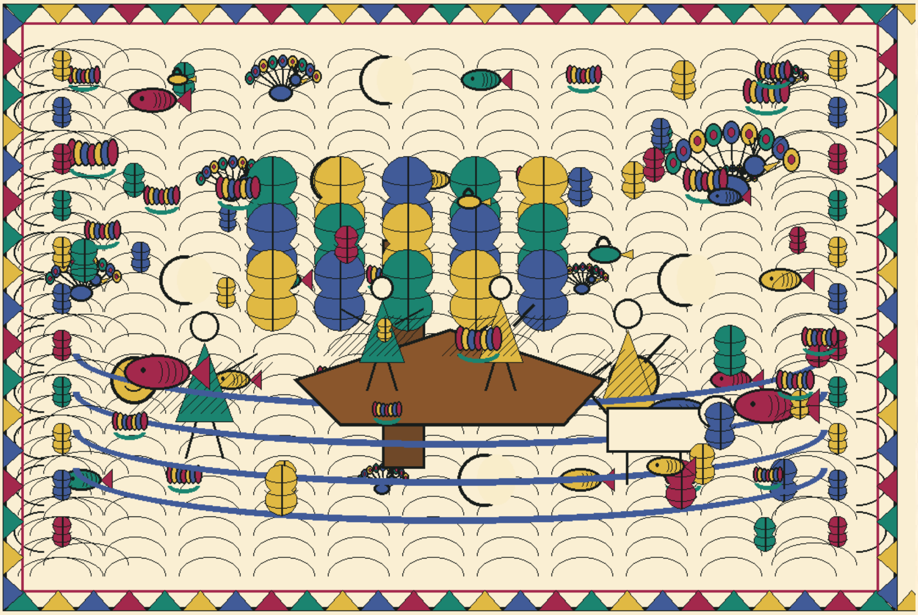

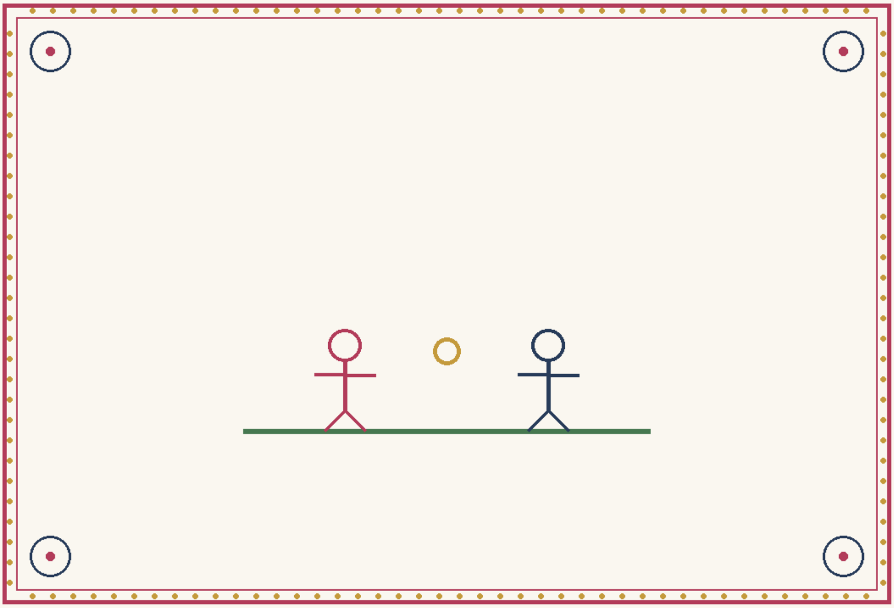

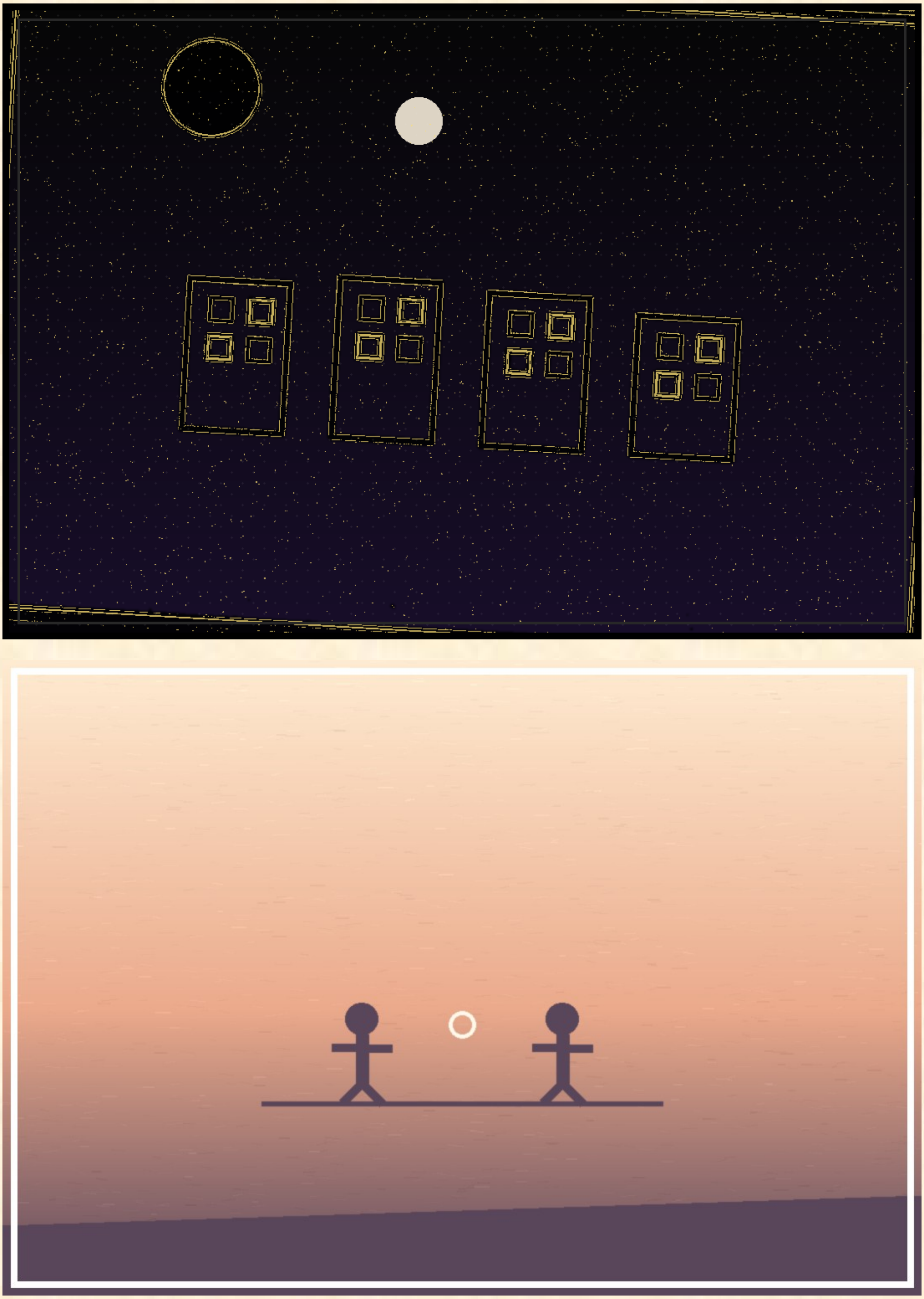

चित्र 21

तकर बाद की भेल? खिस्सा एतय ओही प्रश्नपर ठाढ़ अछि जतय ओमक भविष्यवाणी — 'जखन ओ हमरा सभकेँ चीन्हि जाएत...'

आ चीन्हब कोनो जादू नहि थिक। चीन्हब माने संगे खेलब, संगे भीजब, संगे हारब-जीतब। पार्क सभकेँ अन्ततः चिन्हा दैत अछि — ई पार्कक धर्म छै। कोनो ने कोनो साँझ सुसेनक गेन्द सेहो ओही घेरामे खसत जतय ओम आ मंशा खेलाइत अछि — आ खेलमे 'गन्दा' शब्द बेसी दिन नहि टिकैत अछि; खेल ओकरा घसि-घसि कऽ 'दोस' बना दैत अछि।

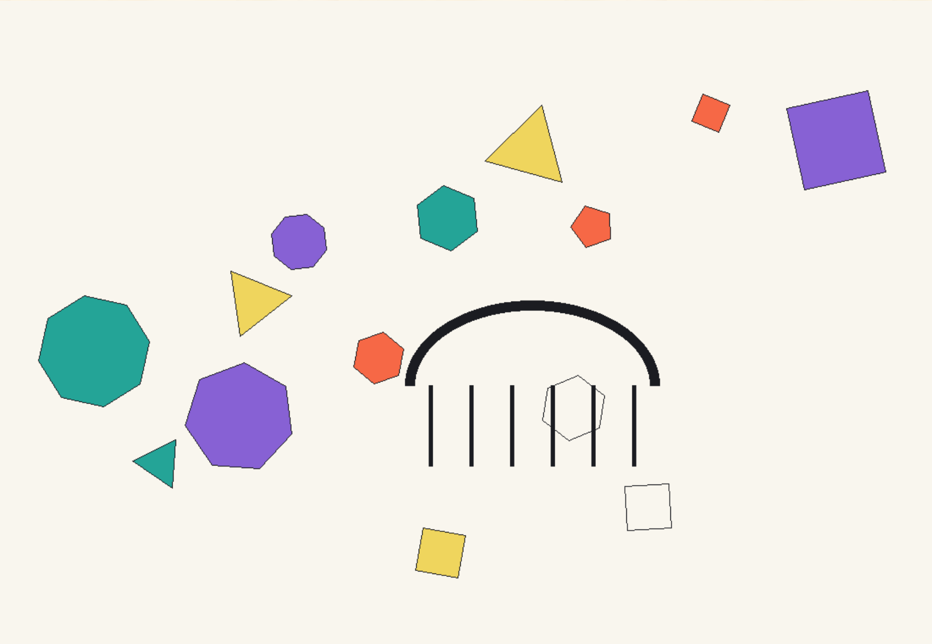

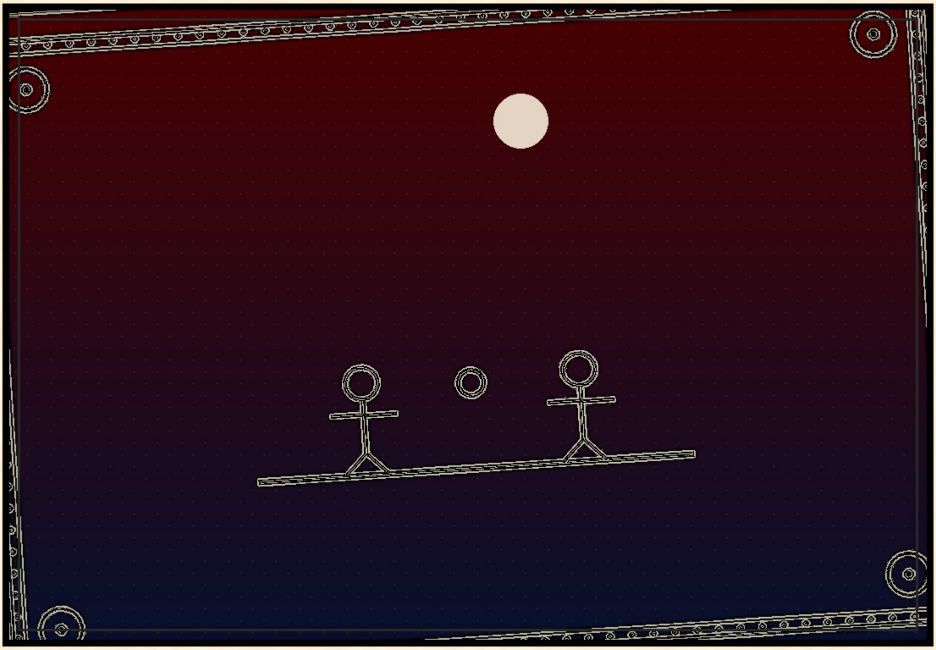

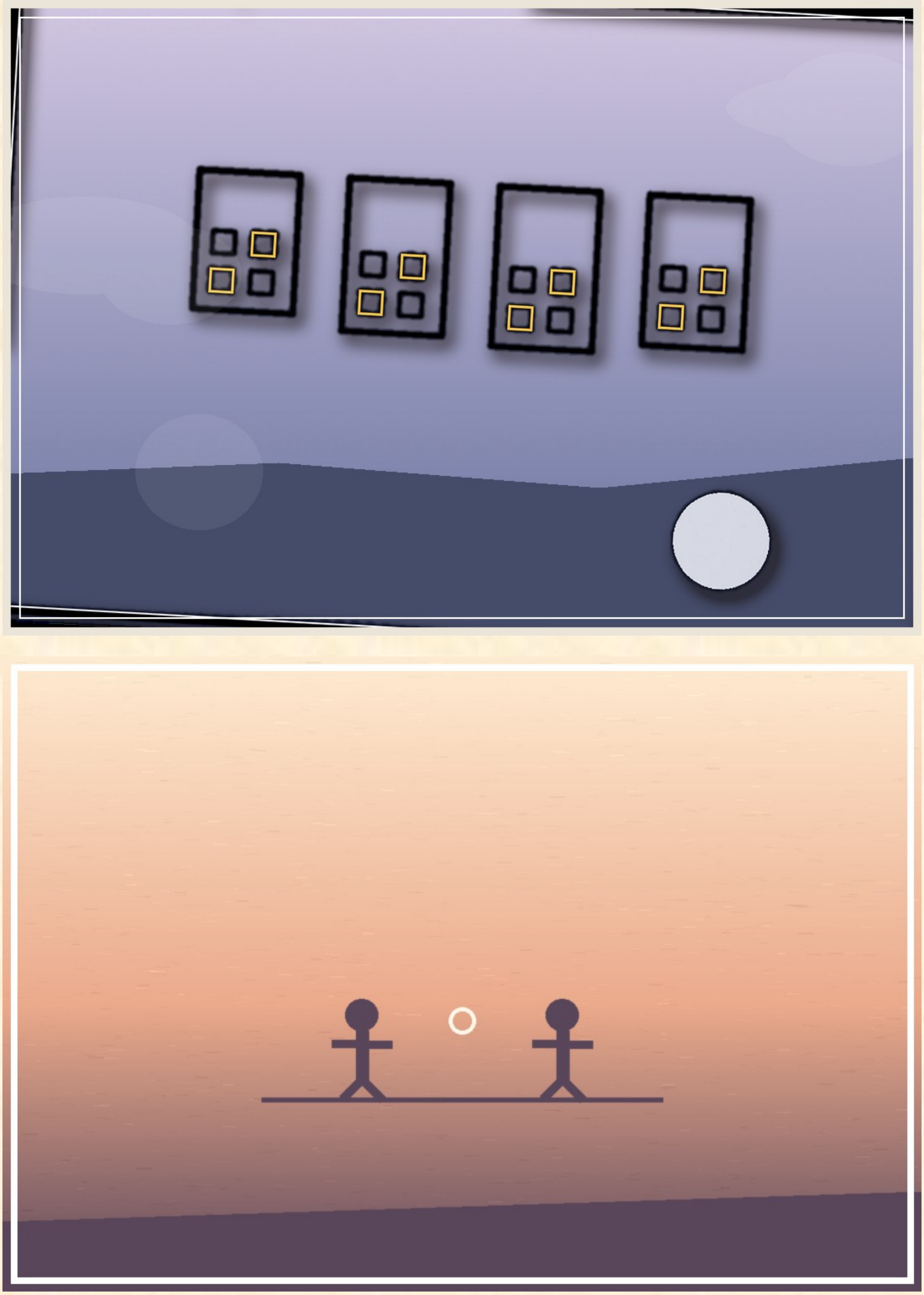

चित्र 22

जन्मदिन फेर आओत, केक फेर कटत, उपहार फेर कीनल जाएत। खाली एहि बेर, कदाचित्, दरबज्जापर घण्टी एक बेर बेसी बाजए — आ माए, बिनु पुछनहि, एकटा उपहार बेसी कीनि कऽ राखथि।

आ महुआ? ओ ओहिना साँझखन मंशाकेँ पार्क अनैत रहतीह, ओहिना गुनगुनाइत रहतीह अपन गामक अपूर्ण गीत। कखनो काल, ओमक माएक पठाओल थारी लग बैसि, ओ गीत कनी आगाँ धरि सेहो गाबि लेतीह — कारण जतय केओ नामसँ चिन्हैत अछि, ओतय गीतक गरा नहि भरैत छै।

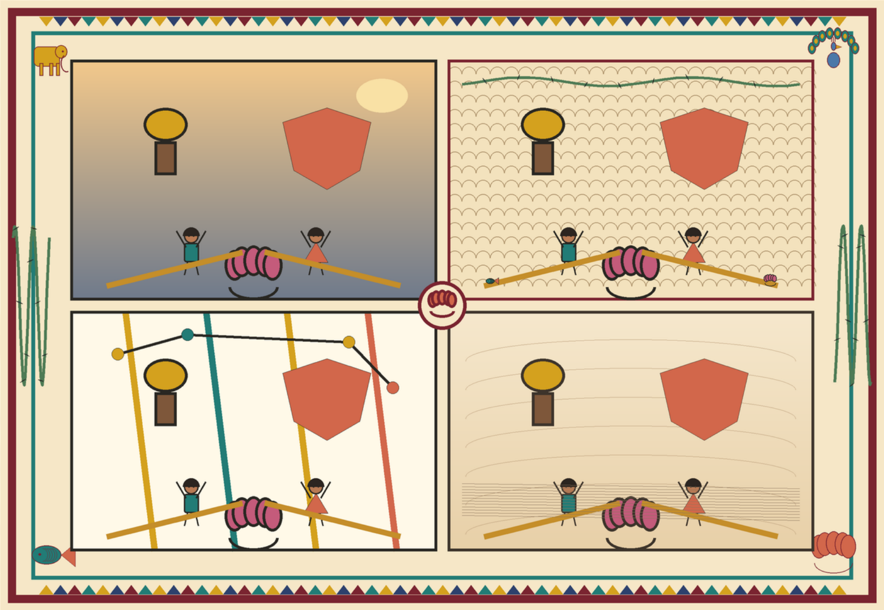

अध्याय १२ : बाल गुरु

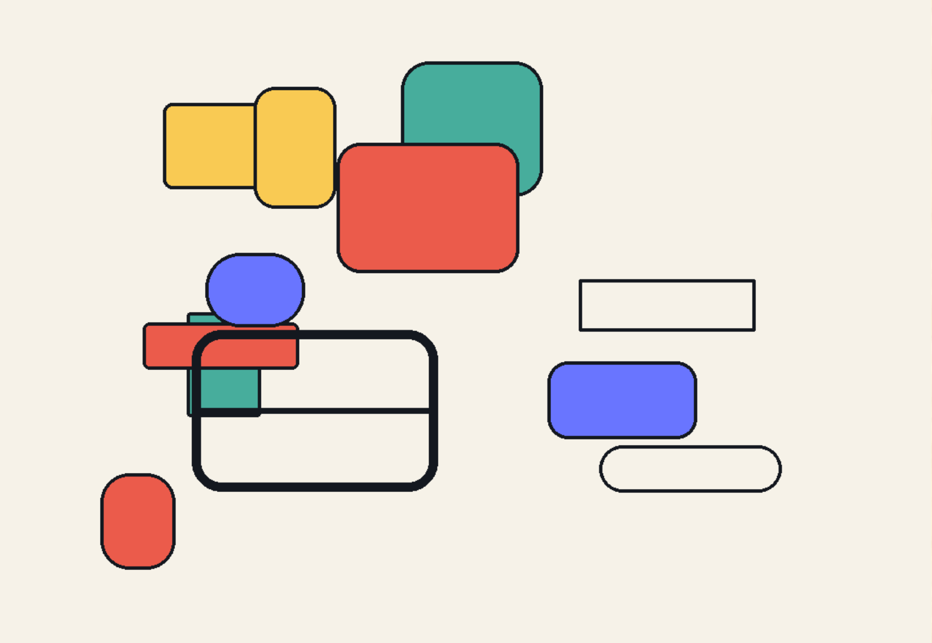

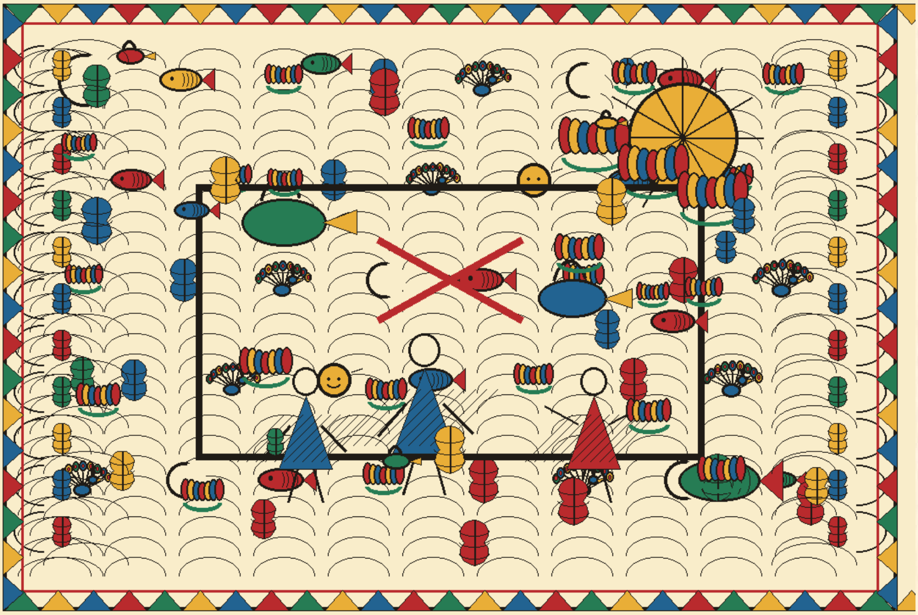

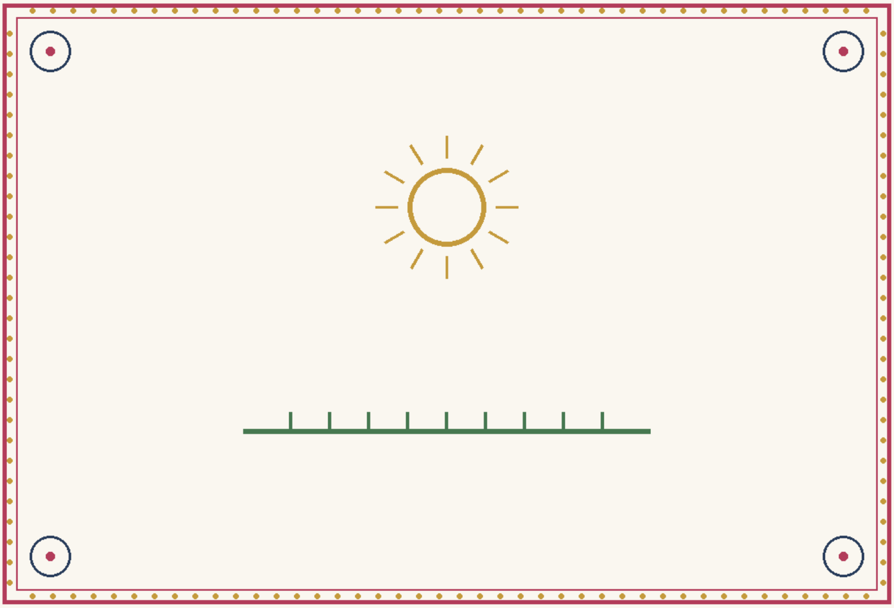

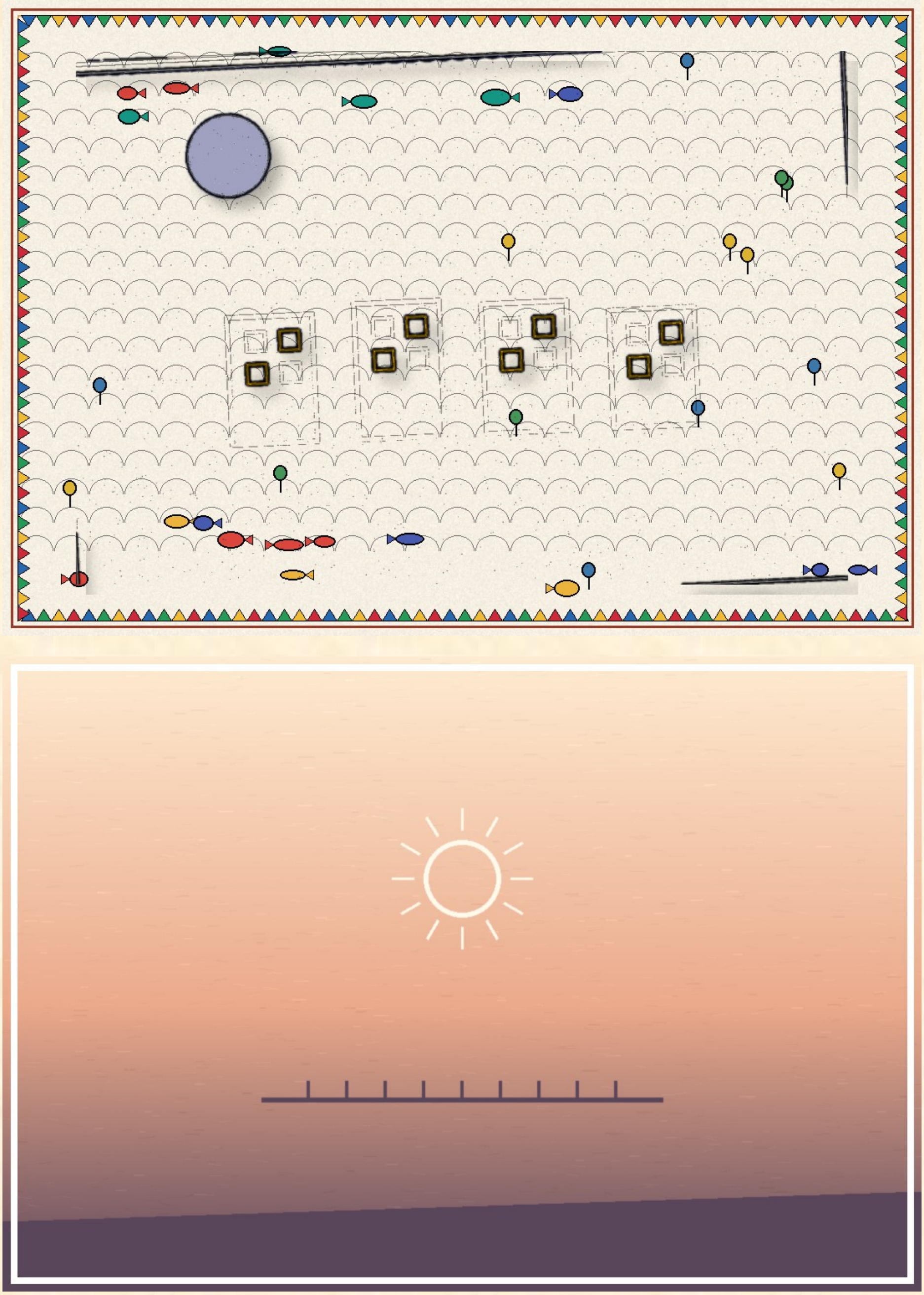

चित्र 23

गुरु के होइत अछि? जे अन्हारमे बाट देखा दिअए। ओहि साँझ दिल्लीक ओहि आवासीय परिसरमे बाट के देखौलक? — पाँच बरखसँ छोट एकटा बच्चा, जे लड़ब नहि जनैत छल, मुदा बुझब जनैत छल।

बड़का लोक झगड़ाक उत्तर झगड़ासँ ताकैत अछि, अपमानक उत्तर अपमानसँ। ओम उत्तर ताकलक चीन्हबसँ। तेँ ओ बाल छल, मुदा गुरु भेल — बाल गुरु।

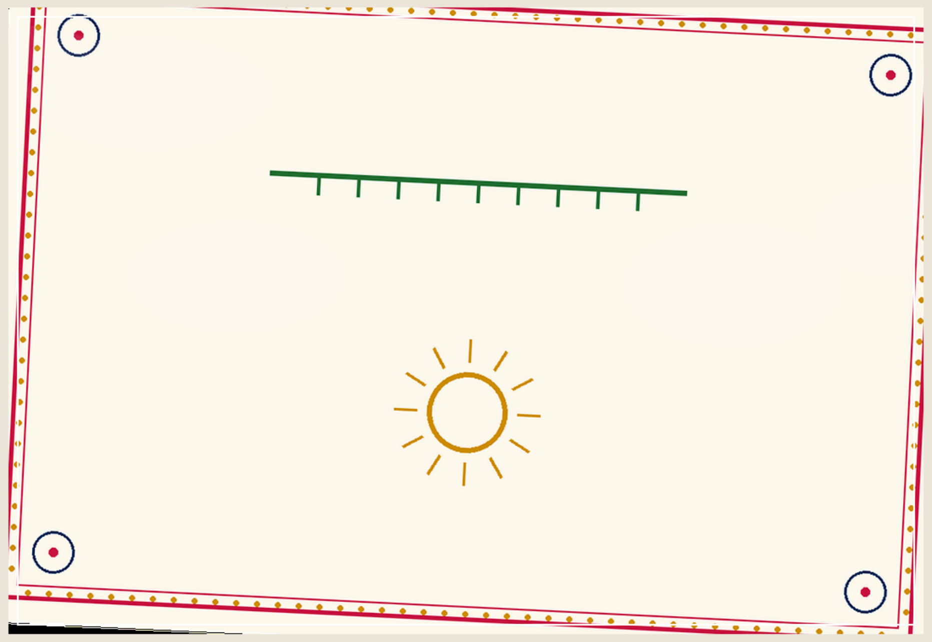

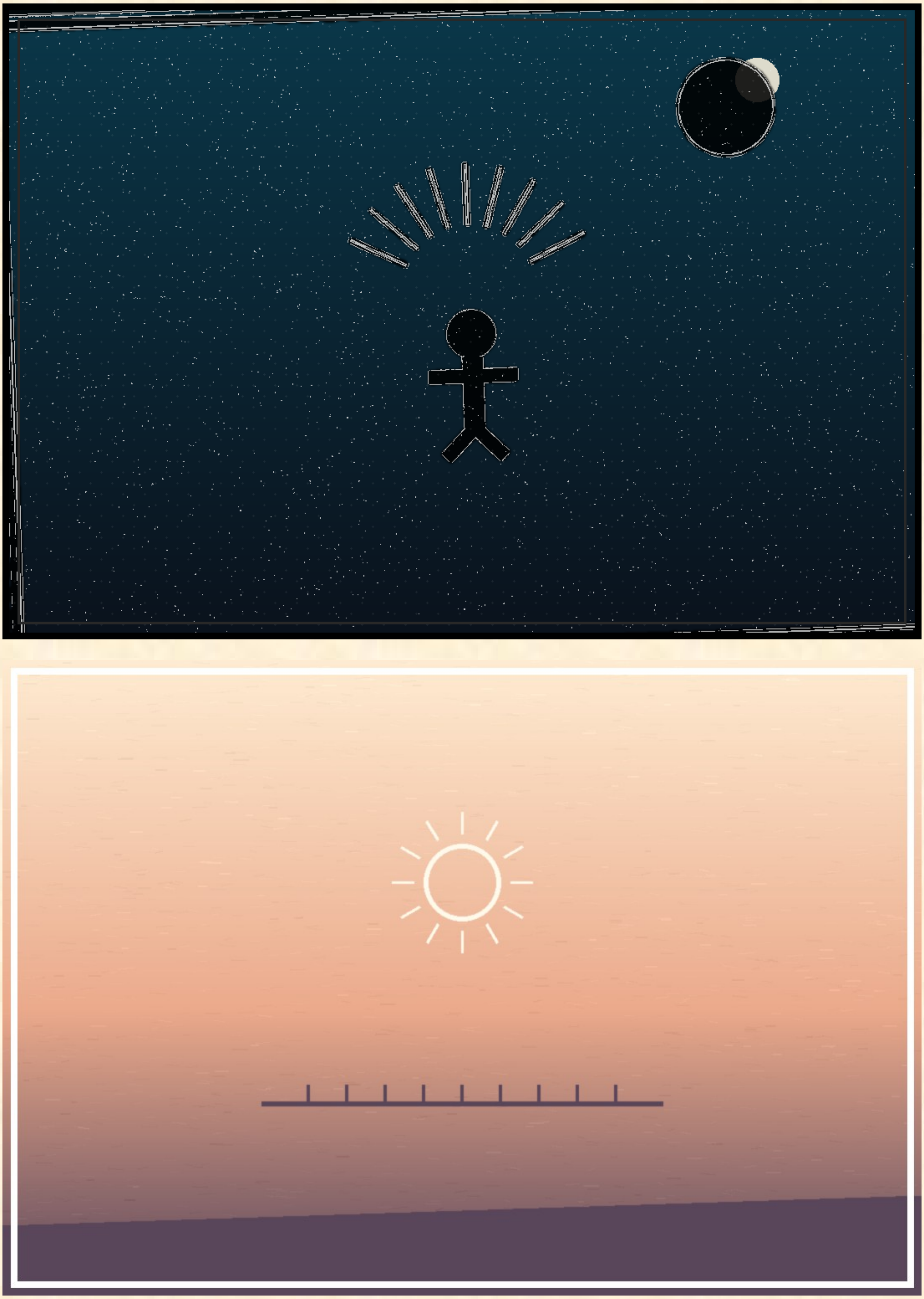

चित्र 24

आ मंशा? ओहो कम गुरु नहि। ओ सिखौलक जे दोस लेल ठाढ़ होएब सेहो धर्म थिक — साँच बाजब, से डरे नहि रुकब। एक गुरु क्षमाक, एक गुरु साहसक। दुनू मिलि कऽ पूरा पाठ।

घासक पार्कमे आइयो साँझ पड़ैत अछि, झुला आइयो झूलैत जाइ अछि। आ जे केओ ओतय कान लगा कऽ बैसए, ओकरा आइयो दूटा छोट नाम सुनाइ पड़तै — ओम, आ मंशा — आ संगहि ओ वाक्य जे कहियो पुरान नहि हएत: जे चिन्हि जाइत अछि, से गन्दा नहि कहैत अछि।

समाप्त

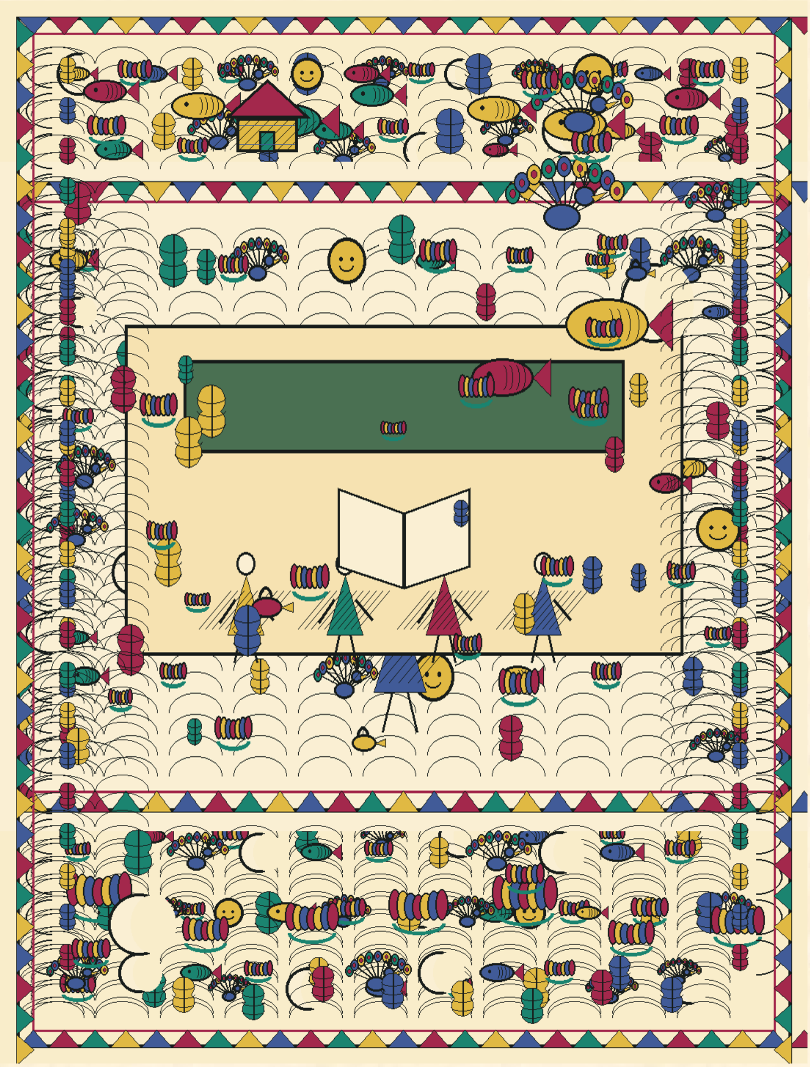

VIDEHA विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका **ISSN 2229-547X** www.videha.co.in